R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 23वें वर्श में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

# शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
*उमेश श्रीवास्तव*

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

डॉक्टर प्रदीप चित्रांशी पर केंद्रित विशेषांक

वर्श 23 अंक 24 रविवार, इलाहाबाद, 05 नवंबर 2023 पृष्ठ 8 विशेषांक मूल्यः 5 रू0

## संपादकीय

### इस बार डॉ प्रदीप चित्रांशी

दोहा, गीत, कहानी लिखते ,
दिखने में वह सरल सा दिखते ।
बात पते की कहते रहते ,
दोहा में गढ़-गढ़ मढ़ते हैं ।
ज्ञान-वान विज्ञान की बातें ,
**जन्मे इलाहाबाद शहर में ।**

तो बात डॉक्टर प्रदीप चित्रांशी की हो रही है। विज्ञान के छात्र रहते हुए हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य के प्रति उनका अनुराग विलक्षण है। उन्होंने दोहा जैसे छंद को एकदम से आत्मसात कर लिया है। आत्मसात कहने का अभिप्राय यही है

कि जो व्यक्ति किसी वस्तु, चीज या छंद को आत्मसात कर लेता है तो उसके वाक्य अपने आप उस छंद विधान में मढ़े हुए निकलते हैं। 7000 से ऊपर दोहा लिखने वाले डॉक्टर प्रदीप चित्रांशी के दोहों में आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और श्रृंगारिक दोहे भी प्रचुर मात्रा में है।

उदाहरण देखिए -

**कथा पुजारी बाँचते, हाफिज पढ़े कुरान।**
**गंग-जमुन तहज़ीब ने,दी सबको मुस्कान।।**

...

**नया सवेरा आ गया,रवि किरणों के संग।**
**आओ इससे हम भरे,जीवन में हरि-रंग।।**

...

**जनता को भरमा गया,नेता जी का झूठ।**
**हरियाली को खा गए,कहकर उसको ठूँठ।।**

दोहा के अलावा डॉक्टर प्रदीप चित्रांशी के गीत-गजलों में कोमलता भी विशेष प्रकार की रहती है। उनकी गजलों में ताजगी और गीतों में माधुर्य का असीम अनुराग परिलक्षित होता है। बाल मन की कविताएं और कहानी लिखने में तो डॉक्टर प्रदीप चित्रांशी का कोई शान ही नहीं है। जीवन के चौथे पहर में भी डॉक्टर प्रदीप चित्रांशी की थिरकन किसी युवा से कम नहीं है। माता-पिता, भाई-बहन और अपनी पत्नी के प्रति उनका अनुराग और प्रेम अनुकरणीय है। डॉक्टर प्रदीप चित्रांशी पर केंद्रित इस विशेषांक में जिन विद्वानों का लेख ,विचार समाहित है , हम हम उन्हें हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। विशेषांक कैसा लगा प्रक्रिया जरूर दें।

अंत में

**चलते रहो, चलते रहो ,**
**यह सफर अपरंपार है ।**
**जीवन धरा पर गर मिला ,**
**समझो यह मोह विस्तार है ।**

**उमेश श्रीवास्तव**

# दिल के भाव कलम लिखती है

बाजार में मिट्टी के छोटे-छोटे दीपक के साथ दीपावली पर्व पर आकर्शक मूर्तियाँ त्योहार का मुख्य आकर्शण हैं। दीपक का सौन्दर्य और मूर्तियों की पवित्रता का संगम ही इस त्योहार का मूल आधार है। यही आधार मानव जीवन को आत्मिक सुख का बोध कराता है। यह सत्य है कि मिट्टी मूल्यहीन है लेकिन जब इसे कुम्हार की पाठशाला में जाने का मौका मिल जाता है तब यह तप की योगशाला में तपकर अपनी नूतन आकृतियों से जगत को सत्य का पाठ पढ़ाते हुए, त्योहारों की जनक बन जाती है। कुछ इसी तरह से माँ की संस्कारशाला,पिता की कर्मशाला और गुरु की पाठशाला की त्रिवेणी में जब बच्चा शब्दज्ञान से परिचित होता है तब उसके दिल के भाव को कलम लिखती है जो पाठकों को आह्लादित करते हुए, आत्मिक सुख का बोध कराती है। मैंने कभी खुद को गद्य-पद्य विधा का तत्वज्ञ नहीं समझा लेकिन मेरे दिल के भाव को कलम लिखती रही जिसे मर्मज्ञों ने कहानी, गीत, कविता,दोहा और मुक्तक कहा।

## कवि की कलम से

मैंने पहली कविता उस समय लिखी थी जब मैं कलम से परिचित नहीं था केवल पेन्सिल से अक्षरों को कॉपी पर उकेरा करता था। यह बात मैं उस समय की कर रहा हूँ, जब मैं जमुना क्रिश्चयन प्राइमरी स्कूल में कक्षा तीन में पढ़ता था। दत्त मैडम मेरी क्लास टीचर थीं। प्रतिवर्श स्कूल की तरफ से मैगज़ीन निकलती थी। उस मैगज़ीन में स्कूल की गतिविधियों के अलावा बच्चो के द्वारा लिखी गई कविताएँ और कहानी भी छपती थी। मैगज़ीन छपने से पहले स्कूल की क्लास टीचर अपनी-अपनी कक्षा में कविता और कहानी सुनाती थीं। सुनाने के बाद वह बच्चो से कहती थीं कि जो उन्होंने सुनाया है, उसे लिखकर दिखाओ। बच्चे जब लिखकर जमाकर देते थे, उनमें जो अच्छा होता था, उसमें कुछ सुधार करके मैगज़ीन में छपने के लिए दे देती थीं। दत्त मैडम को मेरी कविता अच्छी लगी, उन्होंने कुछ सुधार करके मैगज़ीन में छपने के लिए दे दिया। इस तरह मेरी पहली कविता स्कूल में छपी जिसे देखकर मेरे पिता जी ने मेरी पीठ थपथपाई और पाँच पैसे पुरस्कार के रूप में दिये। बचपन में पिता जी के साथ जब भी किसी पार्टी में या घूमने के लिए जाता था, वहाँ से वापस आने के बाद वह मुझसे कहते थे कि जो कुछ भी तुमने देखा है,उसे लिखो। लिखकर मैं,उन्हें सुनाता था। सुनने के बाद वह उसे पढ़ते थे तथा गलतियों से अवगत करवाते थे। घर में पिता जी हमलोगों के लिए बाल-पत्रिका चंपक, चन्दामामा, नंदन और पराग मँगाते थे। इन्हीं पत्रिकाओं की कहानियाँ,टीचर और पिता जी के मार्गदर्शन में कब और कैसे कहानी और गीत कलम लिखने ल गी, मुझे पता ही नहीं चला।

विज्ञान का छात्र होने के कारण कुछ समय के लिए मैं साहित्य से बहुत दूर हो गया था लेकिन सन् १९८१ में आई ई आर टी से विद्युत अभियंत्रिकी में डिप्लोमा लेने के बाद जब मैं जी ई सी लिमिटेड नैनी से १९८५ में भारत सरकार के उपक्रम आईटीआई लिमिटेड, मनकापुर आया, यहाँ आने के बाद साहित्य के बीज पुनः अंकुरित होने लगे। दिन में मैं मशीनों से बात करता तो शाम किताबों के साथ गुजारने लगा। मंचो पर आने का एक बहुत मजेदार वाक्या है, बात लखनऊ स्टेशन के प्लेटएक नम्बर छः की है। मनकापुर आने के लिये मैं ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहा था।

मेरे हाथ में कादम्बिनी पत्रिका थी और मैं एक अतुकान्त कविता लिख रहा था,उसी समय अवधी के कवि अवनीद्र विनोद आ गए। उन्होंने मेरी रचना देखकर कहा कि आप कविता लि खते हैं लेकिन मनकापुर की काव्य गोष्ठियों में दिखाई नहीं देते। मैंने उनसे कहा कि मैं यूँ ही लि खकर कभी-कभी पत्रिकाओं में भेज देता हूँ, कहीं जाता नहीं हूँ। साहित्यिक चर्चा के दौरान समय का पता ही नहीं चला कि ट्रेन कब आयी और हमलोग मनकापुर आ गये। अगले ही रविवार को मनकापुर में कवि गोष्ठी थी और आयोजक ने मुझे आमंत्रित किया था। मैंने पहली बार कविता पाठ किया,कविता सराही गई। इस सफर में अदम गोण्डवी, बेकल उत्साही,डॉ॰ कुँअर बेचैन के साथ मंच साझा करने के कई अवसर मिले। एकबार मैं बाल पत्रिका 'बालप्रहरी' के साहित्यिक कार्यक्रम में कौसानी गया था। यहाँ पर मेरी मुलाकात छन्दों के मर्मज्ञ कवि महेश सक्सेना से हुई। उनसे मेरी दो दिन तक अतुकान्त/नई कविता और छन्दयुक्त कविता पर चर्चा चलती रही। मैंने उन्हें अपना गुरु स्वीकार करते हुए,उनसे छन्दों का ज्ञान लि या। आज मैं भी छन्दों की वकालत करते हुए, गीत,ग़ज़ल,मुक्तक, कहानी के अलावा लगभग आठ हजार दोहे लिख चुका हूँ।

कुछ दिन पूर्व दैनिक समाचार पत्र के संपादक एवं कथाकार उमेश श्रीवास्तव,सारस्वत सभागार लूकरगंज, जो मेरी साहित्यिक तपोभूमि भी है,आए। अब लगभग सौ साझा काव्य संकलनो के साथ मेरी चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं उसके अलावा कादम्बिनी,चंपक सहित कई एक पत्रिकाओं में कविता और कहानी प्रकाशित हो चुकी है, जिसका उन्होंने मेरे निज पुस्तकालय का अवलोकन कर, सराहते हुए कहा कि वह 'शहर समता' के माध्यम से साहित्य जगत को मेरी गतिविधियों से अवगत कराएँगे।

# आस्था का रचनाकार डॉ0 प्रदीप चित्रांशी

### प्रो0 रवि कुमार मिश्र

मुझे प्रदीप चित्रांशी जी की रचनाधर्मिता पर लि खना है। रचनाकार प्रदीप चित्रांशी पर, बडे भाई सरीखे प्रदीप चित्रांशी पर। सरीखे इसलिए कि वह मित्रवत भी हो जाते हैं, सरीखे इसलिए कि उनसे सम्बन्ध के फलक इतने आत्मीयता और विविधतापूर्ण की कोई एक नाम देना उचित नहीं होगा। स्वाभाविक है कि ऐसे में उन पर लिखते हुए इस आलेख में शायद वह शोधपरक तटस्थता और वस्तुनिष्ठता नहीं हो, जो प्रायः अपेक्षित होती है। फिर भी.....।

उनकी साहित्यिक संस्था साहित्यांजलि प्रज्योदि का एक आयोजन जो उनके मुट्ठीगंज आवास पर हुआ था, वहीं करीब बारह तेरह साल पहले उनसे पहली मुलाकात हुई। सहज, सरल, सौम्य, जाना पहचाना सा चेहरा पर भीड से हटकर, कुछ अपना सा। उत्सुकता, समर्पण और प्रतिबद्धता से भरा चेहरा और व्यक्तित्व। इंजीनियरिंग की पढाई जीविका के लिए, साहित्य के प्रति अनुराग हृदय के लिए फिर भी दोनों में समन्वय, संतुलन, एक दूसरे की सीमा का सम्मान। साहित्य प्रेमी पिता की संतान, कादम्बिनी के राजेन्द्र अवस्थी के काल चिंतन से प्रभावित, नीरज की कविताओं को सुनकर, कबीर को समझने की उत्कट लालसा वाला व्यक्तित्व और कैसा हो सकता है। अपने स्कूल के दिनों में साहित्यिक अभिरूचि सम्पन्न अध्यापिका मिसेज दत्त का नन्हा शिश्य और कैसा हो सकता था। धीरे-धीरे उनसे, उनकी रचनाओं से परिचय बढता रहा। उनके सम्पर्क के दायरे में बहुत सारे लोग हैं, सबके हिस्से में कुछ न कुछ आया होगा, पर मुझे लगता है कि अनुभव का वो हिस्सा शायद मेरे हिस्से में आया जो कहीं न कहीं लोगों की निगाह और स्पर्श से वंचित था। साहित्यिक मंचों पर वह अपने दोहों के लिए प्रसिद्ध हैं, ओम प्रकाश दार्शनिक ने उन्हें दोहा सम्राट कहा भी है पर वह सिर्फ दोहा तक केन्द्रित कभी नहीं रहे। यह कहा जा सकता है कि दोहा उनके साहित्यिक व्यक्तित्व का कोर सेल्फ या केन्द्रीय आत्म है। छंद पर तो चित्रांशी जी काफी बाद में आये, आकर ठहरने लगे ऐसा कहा जा

...शेश पृष्ठ 7 पर

## जीवन वृत्त

**नाम** : प्रदीप कुमार चित्रांशी
**पिता का नामः** स्व0 बजरंग नारायण श्रीवास्तव
**माँ का नाम** : स्व0 कृष्णा देवी श्रीवास्तव
**पत्नी** : ज्योति चित्रांशी
**पुत्री** : दिव्या चित्रांशी
**दामाद** : संजय मल्होत्रा
**नाती** : विवान मल्होत्रा
**जन्म स्थान** : ग्राम- करुआडीह, इलाहाबाद
**जन्मतिथि** : 23 अक्टूबर 1957
**योग्यता** : इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग (डि0), साहित्यरत्न, विद्यावाचस्पति(मा)
**सम्प्रति** : विद्युत अभियन्ता ,आई टी आई लिमिटेड,(भारत सरकार का उपक्रम)मनकापुर
**सम्पर्क** :113 लूकरगंज (बिहारीपुरी के पीछे),प्रयागराज-211001
मोबाइल :9415666262 / 8726195041

### साहित्यिक परिचय

**साहित्य-विधा** : कहानियाँ ,बाल-गीत, गीत एवं ग़ज़ल
**प्रकाशित पुस्तकः** श्मशान की कबीरी, हँस दे मनवा, चित्रगुप्त चालीसा, कॉव-कॉव कौआ करता है(बाल-गीत)
देश में कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं एवं सौ से अधिक काव्य-संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित, इलाहाबाद आकाशवाणी से काव्यपाठ तथा काव्य-गोष्ठियों में सहभागिता।
**साहित्यिक सम्मानः** विद्यावाचस्पति (सांस्कृतिक कला संगम), विद्यावाचस्पति एवं विद्या वारिधि( विक्रमशिला विद्यापीठ,बिहार) के साथ ही लगभग 70 साहित्यिक संस्थान से सम्मानित।
**संपादनः** कायस्थ-कुल(अनियमित)
**सहायक संपादकः** पत्रकार सुमन
**अतिथि संपादकः** सर्वोदय वार्ता

### संस्थाओं से सम्बद्धताः

**अध्यक्ष**
साहित्यांजलि प्रज्योदि
( प्रकृति-संरक्षण एवं साहित्यिक मंच)
113ए, लूकरगंज,
(बिहारीपुरी के पीछे)
प्रयागराज -211001

# डॉक्टर प्रदीप चित्रांशी की कविताएं

## दोहे

बुरे वक्त में दूर से,करते हैं वे प्यार।
दिल जिनका छोटा रहे,बातें हों दमदार। ।

जिस कुटिया में रह रहे,साधु सन्त इन्सान।
पूजाघर उसको कहें,और विमल स्थान। ।

कबीरा हँसता देखकर, हरि की प्यारी रीति।
नींद महल से दूर हो,करे दीन से प्रीति।।

सत्य धरा का है यही,मतकर अधिक सवाल।
जेठ माह में बिन तपे,खेत न हों खुशहाल। ।

ज्यों सोना तप आग में,मोह रहा संसार।
त्यों गर्मी सह खेत भी,बने उपज आधार। ।

रे मानव!हठ मत करो,काल खड़ा है द्वार।
एसी से बाहर निकल,कर मौसम से प्यार। ।

ईश-भक्त सच्चे वही,जिसका मानव-कर्म।
सेवा को पूजा कहें,और प्रेम को धर्म। ।

सच्चे हरि सेवक सदा,करके हरि का ध्यान।
सेवा में ही ढूँढते,नित्य नूतन हरि-ज्ञान। ।

रे मन!सन्त कबीर का,सुन ले एक विचार।
भोगी जीवन के लिए, मत लो कभी उधार। ।

उलझन भी होगी नहीं,बढ़े प्रेम विश्वास।
चाहत बस इतनी रहे,रहूँ सदा हरि पास। ।

चाहत के ही भाव में,उलझन का संसार ।
साजिश रच खुद ही करें,खुशियों का संसार। ।

उलझन से वे मुक्त हो,पाएँ हरि-विश्वास।
जिसने पढ़ा कबीर को,बैठ उन्हीं के पास।।

रौशन कर संसार को,पढ़ा कर्म-विज्ञान।
दीपक ने तम को दिया, जगह और हरि-ज्ञान। ।

जीवन भर सह ताप को,करते हैं अनुराग।
तम को दे जो रौशनी,कहते उन्हें चराग।।

चित्रांशी बातें करो,उस कबीर की आज।
ईश मिलन की राह का,जिसने खोला राज।।

नाले आवारा हुए, सड़कें गिनती साँस।
पहली ही बरसात में,आयें भरे विकास। ।

सड़कों पर नावें चली,शहर हो गए दीन।
साहब चाँदी हुई,देख सुरा-नमकीन।।

आफत आई है नई,नगर नीर में डूब।
मैली नदियों में दिखे,उतराई-सी दूब।।

जीवन का पल-पल हुआ, उनका साधु प्रसंग।
अपने ही मन से सदा,करते हैं सत्संग। ।

नहीं लूट सकता जगत,उनका हर्श-उमंग।
हरियाली को पूजते,रहकर उसके संग।।

राह दिखाकर सत्य का,बात करें गम्भीर।
मन अर्पित कर ईश को,राही बने कबीर। ।

मज़हब से मन मुक्त कर,पढ़ो धर्म-विज्ञान।
मुफ़लिस और फ़कीर का,ईश रखेंगे ध्यान। ।

मज़हब जितने भी दिखे,देते हैं यह ज्ञान।
पाक समर्पण से मिलें,खुदा और भगवान। ।

पूजाघर पावन जगह,करो नहीं बदनाम।
संगम विमल विचार का,अरु हरि का है धाम।।

सुख में भूले राम को,जपा नहीं हरि-नाम।
दुख आते मन्दिर गए,करने उन्हें प्रणाम। ।

एक ईश को छोड़कर, शेश मिथ्य संसार ।।
अन्तकाल में आ रहे,ऐसे विमल विचार। ।

कहते सन्त कबीर हैं,तज दुनिया की रीति।
कर्म करो सुख से रहो,जोड़ो हरि से प्रीति।।

शिक्षित उनको मत कहें,जिनका ज्ञान-प्रसाद।
अहंकार का बन जनक,घर-घर करे विवाद।।

वे ही कहते हैं सदा,मैं हूँ बहुत महान।
जिसने हासिल है किया,केवल पुस्तक-ज्ञान।।

साँस रुकी पंक्षी उड़ा,माटी हुआ शरीर।
रे मन!समझो रीति को,कहते सन्त कबीर। ।

मँहगाई के तीर से,करती नित्य प्रहार।
जनता के द्वारा चुनी,जनता की सरकार।।

उतरी ज्यों आकाश से,मँहगाई बन काल।
थाली से गायब हुए,रोटी चावल दाल।।

जनता को भरमा गया,नेता जी का झूठ।
हरियाली को खा गए,कहकर उसको ठूँठ।।

मँहगाई के तीर से,करती नित्य प्रहार।
जनता के द्वारा चुनी,जनता की सरकार।।

उतरी ज्यों आकाश से,मँहगाई बन काल।
थाली से गायब हुए,रोटी चावल दाल।।

जनता को भरमा गया,नेता जी का झूठ।
हरियाली को खा गए,कहकर उसको ठूँठ।।

साधु वही हरि-ज्ञान दे,करे जगत उत्थान।
जिसकी झोली में रहे, व्रत तीरथ रमजान। ।

दीवाने को मत कहो,पागल और फ़कीर।
सीखो कैसे मस्त हैं,कहते सन्त कबीर। ।

कान्हा जी के सामने,मीरा-सा व्यवहार।
हर लेता है बिन कहे,मन के कलुश-विचार। ।

सत्ता-सुख के ही लिए, है सारा संघर्श।
मूरख जनता जाति पर,करती रही विमर्श। ।

राजनीति व्यापार का,है दूजा इक नाम।
स्वार्थ सिद्धि के हेतु ही, नेता करें प्रणाम। ।

पाँच साल तक दूर हो,दिया जिन्होंने पीर।
दादी अम्मा के लिए, लाए हैं अब खीर। ।

तन की गति को देखने, जो आया श्मशान।
लौट मोह में लिप्त हो,भूला मृत्यु-विधान।।

रे मानव!तन पर नहीं,कर तू अधिक गुमान।
आना मेरे पास है,कहते है श्मशान। ।

कबीरा संगत से मिली,उनको हरि-पहचान।
समझ गए जो मोह में,माया का विज्ञान। ।

डीजल अरु पैट्रोल जब,गए गगन के पार।
करो सवारी साइकिल, छोड़ो मोटर कार ।।

पहली ही बरसात में,उठने लगे सवाल।
गड्ढा मुक्त प्रदेश में,सड़कें खस्ताहाल। ।

नदियाँ कीचड़ ढो रहीं,गाँव ढूँढते छाँव।
नारों में सिमटे रहे,मिला सभी को ठाँव। ।

रे मन!हरि-सत्संग में,मिले उन्हें मुस्कान।
तजा जिन्होंने रार को,धरा ईश का ध्यान। ।

हरि कीर्तन में हरि नहीं,केवल उनका नाम।
सेतु बनाकर भक्ति का,करे उन्हीं का काम। ।

हारे को हरि जीत दें,निर्धन को सम्मान।
रे मन!कहा कबीर ने,हरि हैं बहुत महान।।

रे मन!जो हनुमान-सा,हुआ ईश में लीन।
दीनी-शिक्षा में वही,होता सदा प्रवीन। ।

मतमस्तक होते जहाँ,लोभ मोह अधिकार।
सदा उपजता है वहीं,हरि का प्रेम-विचार।।

रहकर हरि-दरबार में,कहते सन्त कबीर।
धर्म उसे ही जानिए, खींचे हरित लकीर।।

नया सवेरा आ गया,रवि किरणों के संग।
आओ इससे हम भरे,जीवन में हरि-रंग।।

सारे धर्म किताब ने,बात कही उपयुक्त।
अनुशासित जीवन सदा,रहे रोग से मुक्त। ।

तजकर हरि-मुस्कान को,ढूँढ रहे हैं ठाँव।
उनको मिलता है नहीं,कभी ठौर अरु छाँव। ।

दौलत का अभिमान ही,बनकर दुख-आधार।
सुख की शैय्या पर पड़ा,लाता कलुश-विचार।।

देख झोंपड़ी हॅस रही,महलों का अभिमान।
कंधे मिले उधार के,पहुँचे तब श्मशान। ।

सच केवल बस एक है,जाना है श्मशान।
चित्रांशी!इन्सान बन,मत बन तू भगवान।।

इस सच को भी जानिए,बनिए नहीं महान।
झोंपड़ियों के दान से,धनिक बने धनवान। ।

निर्मलता को ही सदा,मिलता है शिव-छाँव।
जैसे सूरज दे रहा,कीच-नीर को ठाँव।।

अपमानित जिसने किया,अपनो का विश्वास।
वे ही सुख का कर रहे,जग में आज तलाश।।

चाहत जिनको है नहीं,मिले उन्हें पहचान।
रहती उनके पास में, बचपन की मुस्कान। ।

उम्मीदों की टोकरी,ख़्वाबों की बारात।
जिसने भी इनको तजा,मिली नींद सौगात।।

थककर बिस्तर पर गए,लेकर इक उम्मीद।
माँ की हों बस लोरियाँ,अरु बचपन की नींद। ।

प्रश्न नहीं उत्तर बनी,करे ईश का काम।
सच्ची कविता है वही,कश्ट हरे बिन दाम।।

आँसू को संतोश दे,करे ईश्वर का काम।
दर्पण-सा सच जो कहे,कविता उसका नाम।।

हरि-पथ की अनुगामनी, भौतिकता से दूर।
कविता के ही नाम से,जग में है मशहूर। ।

दृश्टि बदलकर देखिए, गाँठ पड़े संबन्ध।
पुनः भर रहे बन्ध में,सोंधी पुश्प-सुगन्ध।।

हँसी-ठहाका बतकही,आपस के संवाद।
भौतिकता की चाह में,हुए आज बरबाद। ।

कहाँ गई इन्सानियत, कहाँ गए ईमान।
घर-आँगन को बाँट कर, सिमट गया इन्सान। ।

सुनकर सभ्य समाज की,गाली लच्छेदार।
पानी-पानी हो गए, सारे पानीदार। ।

बेशर्मी के बोल ने,चीर दिया जब लाज।
बाँछें उनकी खिल गईं, रोया सभ्य समाज। ।

पछताओगे उम्र भर, लगेगी तुमको हाय।
आँख मूँदकर यदि कहा, गिरगिट को भी गाय।।

शब्दों के बाज़ार में,उतरा सावन आज।
नेह भरी बारिश हुई, पुलकित हुआ समाज।।

शहर उगे हैं खेत में, गाँव नशे में मस्त।
किसको अब परवाह है, नभ में बादल पस्त।।

भादो के इस दृश्य पर, किसका है अब ध्यान।
वस्त्रहीन पर्वत हुए, नदियाँ ताल-समान।।

अज़ब रीति तहज़ीब की, अद्भुत है फ़रमान।
खुले आम अब बेचिए, ज़र जमीन ईमान।।

बढ़ते भ्रश्टाचार से,रोता देख समाज।
दुआ प्रार्थना वन्दना,शर्मसार हैं आज।।

जश्न मनाने के लिए, दें मत ग़लत बयान।
बिका आज बाज़ार में,निर्धन का ईमान।।

साँसों के इतिहास का,अद्भुत है यह मर्म।
साथ कर्म को ले गई, तजकर सारे धर्म। ।

कथा पुजारी बाँचते, हाफिज पढ़े कुरान।
गंग-जमुन तहज़ीब ने,दी सबको मुस्कान।।

थोड़ी थोड़ी आशिकी,थोड़ा- थोड़ा प्यार।
समय देखकर कीजिए, मौसम के अनुसार। ।

दिल रोया आँखें हँसी,रूठ गई मधु आस।
साली से मिलने गए, मिली वहाँ पर सास।।

## मुक्तक

सुनाओ हाल उनकी बेबसी का।
सहारा जो बने थे जिन्दगी का।
उन्होंने क्यों कही यह बात कड़वी -
भरोसा मत करो अब आदमी का।

दर्द - गरीबी आम न करना।
इज़्ज़त को नीलाम न करना।
ग़म के मोती हार बनें तो -
खुद को तुम बदनाम न करना।

सोच मानव की हुई कंगाल यारो।
बुन रहा है मौत का वह जाल यारो।
गाँव को जब बेचकर निकला शहर वो -
बन गया खुद ही फ़जा का काल यारो।

देश - दुनिया से अलग संसार लाना चाहता हूँ।
एक पल के ही लिए मैं प्यार पाना चाहता हूँ।
जागते मन में नहीं है ख़्वाब का स्थान कोई -
साँस की अन्तिम बहर को यह बताना चाहता हूँ।

सदा जो भूख से लड़कर हमारे पास आती है।
नमक ज़्यादा हुआ या कम सदा हमको सुहाती है।
पड़ोसी के घरों से जब महक पकवान की आती -
गरीबी में करौंदे संग रोटी खूब भाती है।

ज़िन्दगी जिन्दादिली की इक हसीं पहचान है,
दो दिलों की चाहतों के प्यार का गुलदान है,
बाँधिए मत प्रेम को उम्र की जंजीर से-
यह मुहब्बत मंजरी-सा फागुनी फ़रमान है।

मिली जब चोट अपनों से नयन चुपचाप रोए थे।
सुहानी भोर में उसने अमन के बीज बोए थे।
बिना दुख के नया जीवन नहीं मिलता सुनो यारो -
यही सुनकर सदा मन ने नए सपने सँजोए थे।

भाव का विस्तार करके भाव को आकार दो।
शब्द को परिधान देकर अर्थ का संसार दो।
लिख कलम से अब वही जो सत्य का उद्घोश बन-
इस जगत् में देश की पहचान दो आधार दो।

# डॉक्टर प्रदीप चित्रांशी की कविताएं

हम तुम्हारे साथ हैं नारा सुहाना आ गया।
देख लो किरदार फिर से वह पुराना आ गया।
देश को जो लूटकर झोली सदा भरते रहे -
आज हमको भी उन्हें शीशा दिखाना आ गया।

मुकद्दस दिल सदा हरि का विमल आवास होता है।
समझ इसको लिया जिसने उसे अहसास होता है।
जहाँ में एक ही भगवान नाना रूप रख करके -
करें कल्याण वे उनका जिन्हें विश्वास होता है।

दर्शन करके मयखाने का दिल मेरा मदहोश हुआ।
दुनियाँ चाहे कुछ भी कह ले बेहोशी में होश हुआ।
जाने कितने ख़्वाब अधूरे आज यहाँ पर पूरे होंगे -
दर्द पिया प्यासी मदिरा ने दिल मेरा खामोश हुआ।

तुम्हारी चितवनों में नर्गिसों की बात होती है।
शरद के धूप - सी प्यारी मधुर नगमात होती है।
फिरोज़ी मधु अधर की प्रिय छुवन के प्रेम बन्धन में-
हमेशा सात जन्मों की नई शुरुआत होती है।

बचपन के तकरार निराले यादों का संसार निराला।
रेशम के धागों की डोरी राखी का त्योहार निराला।
रोली चन्दन माथ सुशोभित धागा की अनुपम यह गाथा-
धर्म निभाना मान बढ़ाना है इसका आधार निराला।।

हार भी जीत की गुमनाम प्रिय सहेली है।
भोर की लालिमा-सी वह सदा नवेली है।
अर्थ इसके हजारों कोई भी लगा ले पर-
ज़िन्दगी प्यार की अनबूझ इक पहेली है।

## दादी माँ का गाँव सलोना

दादी माँ का गाँव सलोना,बाग़ानो के खान हैं।
हँसी-ठिठोली हर मौसम की,उनकी निज पहचान हैं।।

खुशियों की बारात उतरती,वासन्तिक परिधान में,
रिश्ते-नाते जीवित दिखते,अधरों की मुस्कान में,
शाम शहर का त्यागो भइया,लौटो अपने गाँव को-
देवालय-सा खेत जहाँ है,फसलें देव-समान हैं,
दादी माँ का गाँव सलोना,बागानो के खान हैं।

जेठ दोपहरी सावन सोंधी, अरु चिड़ियों के गान हैं,
सावन झूला फागुन होली,त्योहारों के मान हैं,
दूध दही मट्ठा मिलता है,गायों की भरमार से-
पर्यावरण रहे सुरक्षित, रहे सदा यह ध्यान में।
दादी माँ का गाँव सलोना,बाग़ानो के खान हैं।

धर्म कबीरा कर्म कबीरा, मानस के रसखान हैं,
खेतों में हँसिया हँसती हैं,चकरी घर की शान हैं,
आँगन का तुलसी चौरा, फूलों के परिवार-सा,
खुशहाली मन के अन्दर भर,हरियाली की खान हैं।
दादी माँ का गाँव सलोना,बाग़ानो के खान है।
हँसी-ठिठोली हर मौसम की,उनकी निज पहचान है।।

## सागर है 'मैं' अवगुण का

हरियाली का स्वांग रचनाकर,खान बना है सतगुण का।
सच कहता हूँ झूठ नहीं है,सागर हैं 'मैं' अवगुण का।।

धन-दौलत की महिमा गाती,छल का पाठ पढ़ाती है,
आँख दिखाकर काम बनाती,धीरे से फुसलाकर है,
माया की अद्भुत यह लीला,गाथा गाती रतगुण का-
रे मन!समझो पढ़कर गीता,सागर है 'मैं' अवगुण का।

ज्ञानी भी अज्ञानी-सा ही,पीट रहे हैं उनका डंका,
शिव-साधक रावण भी जिसके,कारण हार गया लंका,
सूपनखा-सा मोहित करके,बात करे वह यमगुण का-
शिक्षा देती तब रामायण,सागर है 'मैं अवगुण का।

कमज़ोरी है और नहीं कुछ, चौड़ा कर अपना माथा,
आनन्दित होता है मानव, सुनकर निज गौरव-गाथा,
दुर्योधन का दुर्गुण जब भी,काल बना है गण-गण का-
बोल पड़े तब पुस्तक-पन्ने,सागर है 'मैं अवगुण का।

यमुना जैसे गंगा से मिल,गंगा ही हो जाती हैं,
राधा-मीरा ज्यों कान्हा को,सबसे ज़्यादा भाती हैं,
यदि चंचल मन जल-सा होकर,प्यास बुझाते दूजों का-
बाँह पकड़ हरि समझाएंगे,सागर है 'मैं' अवगुण का।।

## गीत

देख अँधेरी रातों को जब,दिल घबराता है,
दिनकर का तब मुझे लड़कपन, बहुत सुहाता है।

पीड़ा से संवाद सदा कर,ढाढ़स देते हैं,
आँसू हैं, आँसू को पीकर,दुख हर लेते हैं,
हरियाली की बात बता जब,सावन गाता है,
भादो का तब मुझे लड़कपन,बहुत सुहाता है।

नित्य नई परिभाशाओं को,मौसम लिखता है,
हाथ पकड़कर कोई चलता,कोई ठगता है,
आपस के संबंधों में जब,संकट छाता है,
मानव का तब मुझे लड़कपन,बहुत सुहाता है।

खेतो के सीने पर जब भी,कोठी बनती हैं,
पगडण्डी गाँवों की रोतीं,सड़कें हँसती हैं,
छल करते शहरों का छल से, अद्भुत नाता है,
कस्बों का तब मुझे लड़कपन, बहुत सुहाता है।

भूख खड़ी दरवाज़े पर जब,खिड़की हिलती है।
बूढ़ी माई अन्दर से तब,खुद यह कहती है,
एक रहो यह पाठ पढ़ाने,मसला आता है,
अम्मा का तब मुझे लड़कपन,बहुत सुहाता है।।

## जाम-ए-मुहब्बत होली है

गुझिया पापड़ आलू भुजिया
जाम-ए-मुहब्बत होली है,
आँखों से आँखे टकराना
नाम-ए-मुहब्बत होली है,
प्यासे की प्यास बुझा जाना
घनश्याम-ए-मुहब्बत होली है,
काशी मथुरा-वृंदावन तो
धाम-ए-मुहब्बत होली है।

चूड़ी खनखन पायल छमछम
इक़रार-ए-मुहब्बत होली है,
आँखों की चितवन प्यार भरी
गमख़्वार-ए-मुहब्बत होली है।

उजड़े गुलशन का हरशाना
गुलफ़ाम-ए-मुहब्बत होली है,
दिनकर का,शबनम को छूना
खय़्याम-ए-मुहब्बत होली है।

पीली सरसो का इठलाना
अरमान-ए-मुहब्बत होली है,
सूर्य सरीखे शशि का होना
शान-ए-मुहब्बत होली है,
होलीयारों का स्वागत करना
लाम-ए-मुहब्बत होली है,
भाँग सहित दारू की बोतल
शाम-ए-मुहब्बत होली है।

नर-नारी नटराज हुए तो पाक-ए-मुहब्बत होली है,
राहों में गुल का बिछ जाना इश्क-ए-मुहब्बत होली है,
बाग़ानों में चहकें चिड़िया आम-ए--मुहब्बत होली है।
काशी-मथुरा परयाग हुए तो श्याम-ए-मुहब्बत होली है।।

## हुई सुखद बरसात

गरमागरम रहा दिन सारा, शीतल श्यामल रात।
बादल गरजे बिजली चमकी,हुई सुखद बरसात।।

राह बताने वाले ही जब, उड़ा रहे उपहास।
तेज हवाएँ करें शरारत, पढ़ा रहीं इतिहास।
किससे दुखड़ा रोऊँ अपना,किससे करूँ गुहार-
सावन की हरियाली रूठी,खुशियाँ हुई उदास।
देख इसे मानव पछताया,तजा अहं औकात।
बादल गरजे बिजली चमकी,हुई सुखद बरसात। ।

दौड़ लगाते दिनकर दिनभर ,गरमाई है शाम।
आग उगलती धरती सारी,ताल हुए गुमनाम।
तरुवर मुँह लटकाए शिव से,करते हैं फरियाद-
तपन बहुत है घन पर अब तो,कसिए तनिक लगाम।
सुनकर शिव हरशाए जैसे, नभ गाए नगमात।
बादल चमके बिजली चमकी,हुई सुखद बरसात। ।

दुश्मन बनी कुल्हाड़ी वन की,सरिता हुई निराश।
घायल छप्पर कहे कहानी,छोड़ महल से आश।
रोते हुए परिन्दे बोले , देख मेघ की चाल-
सावन ने ऐसी लीला की, हम हो गए हतास।
सुनकर शिव ने आँख तिरेरी,दूर हुए सदमात।
बादल चमके बिजली चमकी,हुई सुखद बरसात।

## गीत सुहाने

धरती प्यासी-प्यासी,मेघ न आए,
मौसम ऐसा हमको,कभी न भाए,
बादल गरजो बरसो,नीर बहाओ,
खुशियों की महफ़िल से,पीर भगाओ।

सावन में बरसे अरु ,प्रीत बढ़ाए,
कहते जंगल-उपवन,मेह सुहाए,
मिल जाते हैं जब भी,हर्श-ठिकाने,
चंचल नदियाँ गातीं, गीत सुहाने।

खेतों में खुशियों का,बीज लगायें,
नफ़रत को घर-घर से,मार भगायें,
अच्छी करनी जीवन,पार लगाए,
मन के अन्दर का, खार मिटाए।।

## सुखद विहान

किरणों ने मुस्कान बिखेरी,गाया गान,
आँगन की तुलसी लाती है,सुखद विहान।

अलग-अलग खुशबू बिखराए, हर किरदार,
गुलदस्तों के फूलों-सा है,घर-परिवार,
पतझर देख नहीं घबराते,सूखे पात-
संकट से कैसे उबरेंगे,देकर ज्ञान,
लाते हैं जीवन में सबके,सुखद विहान।

हर मौसम को पढ़कर नित-नित,करते काम,
बना रहे हैं,घर-आँगन को,हरि का धाम,
अधरों पर मुस्कान लिए वे,करते बात-
स्वाद भरें सूखी रोटी में,कह पकवान,
साधु-समान वही लाते हैं,सुखद विहान।

खेतों में खुशियों को बोते,चुनते रार,
अन्त समय में पाते हैं वे,कन्धे चार,
मूँद नयन तब हँसकर गाते,यह नगमात-
चला मुसाफ़िर तज माया को,सुन फ़रमान,
जीवन का विज्ञान यही है,सुखद विहान।

## क्या रखना अब आस

क्या हँसना,क्या रोना यारो,क्या रखना है आस,
अपने ही जब तोड़ रहे हों,अपनों का विश्वास।

किस्मत रूठी,हुए अकेले,दिल में भरकर पीर,
सुधियों में ही जीता-मरता,बनकर एक फ़कीर,
पीड़ाएँ कहती रहती हैं,दिल को देख उदास,
क्या हँसना,क्या रोना यारो,क्या रखना अब आस।

मुस्काते ये राजभवन थे,बोल रहे प्राचीर,
सबके साथ यही होना है,कहती है तस्वीर ,
बूढ़ा बैठा रोटी सेके,चूल्हा दिखे उदास,
क्या हँसना क्या रोना यारो,क्या रखना अब आस।

सच्चाई जग की है यारो,जब रूठे तक़दीर,
भाईचारे के आँगन में,खिंचाई रार-लकीर,
बिन बोले तब सह जाते हैं,नेह-बन्ध उपहास,
क्या हँसता क्या रोना,क्या रखना है आस।।

## छोटी सी पहचान

लोभी से तुम प्यार, कभी मत करना।
क्रोधी की बकवास, दूर से सुनना।
जीवन में मुस्कान, वही हैं भरते।
दूजों की हर बात, नहीं हैं सुनते।।

मन की अपनी बात, मित्र से कहके।
आता संकट दूर, सदा वे करके।
हरि को करके याद, सभी से कहिए।
जीवन के हर अर्थ, समझ कर चलिए। ।

फूलों-सी मुस्कान, दान में देते।
दूजों से अनुदान, नहीं हैं लेते।
छोटी-सी पहचान, साधु हैं सच्चे।
रहिए इनके साथ,सदा बन बच्चे।।

## खिचड़ी

पीकर सारे दुख को खिचड़ी,सुख का बन त्योहार,
बदल रही है धीरे-धीरे,मौसम का व्यवहार।

संगम तट पर भीड़ खड़ी है,नदियों में उत्साह,
गंग-जमुन के जल का देखो,बहता हुआ प्रवाह,
आकर्शित मन को करता है,भरकर भोर उजास,
चलो चलें उस पावन नगरी,जहाँ जले सब दाह,
वहीं रमाकर मन को अपने,रचें नया संसार।
पीकर सारे ------- ------- ।

चावल-दाल ,नमक अरु हल्दी,घी से छौंक-बघार,
या फिर दधि में डूब के खिचड़ी,बन सुन्दर आहार,
देती है संदेश सभी को,हम हैं सबके साथ,
ऐसी खिचड़ी उतर धरा पर,बन जीवन-आधार,
उर की तृश्णा शान्त करे,देकर देव विचार।
पीकर सारे ------- ----।

बीमारों का भोजन बनकर,रहती मंदिर द्वार,
निर्धन और अमीर सभी का,करती है उद्धार,
कई-कई नामों को धरकर,बनके पुण्य नहान,
बाँट रही है देव खुशी बन,करके धर्म-प्रचार,
खिचड़ी तो खिचड़ी है भैया,महिमा अपरम्पार। ।
पीकर सारे-------।।

## आओ गले लगाओ ना

अरे मृत्यु! क्यों बैठी हो तुम, आओ गले लगाओ ना,
प्यार करो हमराही बनकर ,और अधिक तड़पाओ ना।

बिना नाद की लहरें तेरी ,
कब आती हैं पता नहीं ,
सुख-सागर है तेरे अन्दर,
दुख का इसमें पता नही,
जीवन से परिचय कर उसको,
जीवन तथ्य बनाओ ना,
अरे मृत्यु! क्यों बैठी हो तुम,आओ गले लगाओ ना।

अनहोनी होनी से ऊपर,
जहाँ सवेरा होता है ,
आँखों में खुशियों खा पानी,
और न दुख का पानी है
ऐसी सुन्दर पाक भूमि का,
सबको पता बताओ ना ,
अरे मृत्यु!क्यों बैठी हो तुम, आओ गले लगाओ ना।

जहाँ शूल भी पुश्प रूपधर,
बगिया को महकाते हैं,
सावन बनकर सारे मौसम,
सुख की बारिश करते हैं,
बिना पीर की ऐसी धरती,जीवन को दिखलाओ ना,
अरे मृत्यु!क्यों बैठी हो तुम,आओ गले लगाओ ना।

जीत रहा है काल जगत को,
हार रही हैं मुस्काने,
उलझन में तन मंदिर मेरा,
एक निवेदन करता है ,
जीव परिन्दा उड़ने को है,
उसको कुछ समझाओ ना।
अरे मृत्यु! क्यों बैठी हो तुम,आओ गले लगाओ ना।।

## जीवन आस

मृत्यु सदा हँसती गाती है,जीवन रहे उदास,
दर्द नहीं होता है उनको,सावन जिनके पास।

बात अधूरी ज्ञान अधूरा,जीवन पर संवाद
संबंधी परिहास कर रहे और निरर्थक वाद ,
पतझर की आशाएँ पल्लव, करती नहीं निराश ,
धरती से तब अंकुर निकले ,छूने को आकाश।
दर्द नहीं होता है उनको सावन जिनके पास। ।

मुक्त कराकर घोर तिमिर से,रचकर नव संसार,
माँ का आँचल नित करता है,खुशियों का विस्तार,
माया के बन्धन का सागर ,अनुपम देख विकास।,
रोता है यह जीव धरा पर,पाकर पहली साँस,
दर्द नहीं होता होता है उनको,सावन जिनके पास।

जीवन के सुख-दुख का अनुभव, बिन मौसम बरसात,
कब आयी कब चली गई यह,करके अति उत्पात,
मृत्यु धरा पर अमर हुई है या सोया उल्लास
सोच रहा मन संन्यासी बन, तजकर जीवन आस।
दर्द नहीं होता है उनको,सावन जिनके पास। ।

## ग़ज़ल

गाँव की आज सच्ची कहानी लिखो,
अरु किसानो की भी ज़िन्दगानी लिखो।

भूख रहती जहाँ उस जगह पर चलो,
मत बयानी करो बस निशानी लिखो।

खेत-खलिहान में रेत क्यों उड़ रही,
शोध उस पर करो मुँहजबानी लिखो।

मर गया क्यों कृशक कर्ज में डूब कर,
कह हक़ीक़त नहीं कुछ सुहानी लिखो।

मान-अभिमान से कुछ नहीं है मिला,
सच समझ त्याग की जाफरानी लिखो।

वक़्त कहता पुराने बसे गाँव की,
आज 'परदीप' कुछ तर्जुमानी लिखो।।

## ग़ज़ल

करते रहे हमेशा हरिगान ज़िन्दगी में।
रहते नहीं अधूरे अरमान ज़िन्दगी में।।

सब लोग हैं मुसाफ़िर जिसने समझ लिया यह।
खुशियाँ उसे मिलेगी वीरान ज़िन्दगी में।।
शिज़दा करें अगर हम माँ को खुदा समझकर।
रहती करीब हरदम मुस्कान ज़िन्दगी में।।

दुनिया भटक गई जब होने लगी परेंशा।
आयी किताब गीता कुरआन ज़िन्दगी में।।

देते नहीं दग़ा जो करते वफ़ा हमेशा।
होते नहीं कभी भी हैरान ज़िन्दगी में।।

सुनना नहीं कभी भी 'परदीप ' बात उनकी।
रहती करीब हरदम मुस्कान ज़िन्दगी में।।

## ग़ज़ल

करते रहे हमेशा हरिगान ज़िन्दगी में।
रहते नहीं अधूरे अरमान ज़िन्दगी में।।

सब लोग हैं मुसाफ़िर जिसने समझ लिया यह।
खुशियाँ उसे मिलेगी वीरान ज़िन्दगी में।।

शिज़दा करें अगर हम माँ को खुदा समझकर।
रहती करीब हरदम मुस्कान ज़िन्दगी में।।

दुनिया भटक गई जब होने लगी परेंशा।
आयी किताब गीता कुरआन ज़िन्दगी में।।

देते नहीं दग़ा जो करते वफ़ा हमेशा।
होते नहीं कभी भी हैरान ज़िन्दगी में।।

सुनना नहीं कभी भी 'परदीप ' बात उनकी।
रहती करीब हरदम मुस्कान ज़िन्दगी में।।

## ग़ज़ल

कुदरती कहानी सुनानी पड़ेगी।
खुदा की रियासत दिखानी पड़ेगी।

# डॉक्टर प्रदीप चित्रांशी की कविताएं

अज़ल है सुहाना अजल है सुहानी।
ज़बानी सभी को सिखानी पड़ेगी।।

ग़लत राह पर जो चले हैं हमेशा।
सुबह-शाम गीता पढ़ानी पड़ेगी।।

नहीं इस खल़क का मखदूम कोई।
यही बात सबको बतानी पड़ेगी।।

जहाँ प्रेम का एक दीपक जला हो।
वहीं गीत-महफ़िल सजानी पड़ेगी।।

कहे आज परदीप सुन लो सभी की।
उमर बीतते जाँ गवानी पड़ेगी।।

## ग़ज़ल

कुदरती कहानी सुनानी पड़ेगी।
खुदा़ की रियासत दिखानी पड़ेगी।

किया प्रेम जिसने मिली जीत उसको।
यही सीख जग को सिखानी पड़ेगी।।

मिली मुफ़लिसी में फ़कीरी अगर तो।
खुद़ी राह अपनी बनानी पड़ेगी।।

नहीं इस खल़क का मखदूम कोई।
सभी को हक़ीक़त बतानी पड़ेगी।।

जहाँ प्रेम का एक दीपक जला हो।
वहीं गीत-महफ़िल सजानी पड़ेगी।।

कहे आज परदीप सुन लो सभी की।
उमर बीतते जाँ गवानी पड़ेगी।।

## सरहज से परिहास

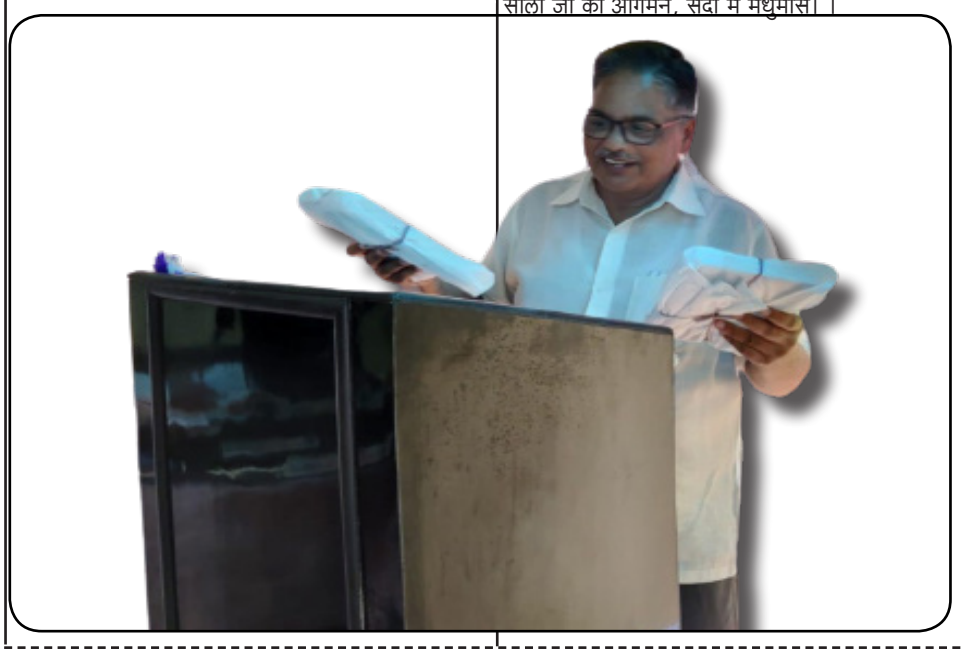

ढलते यौवन को मिला,ज्यों नव दुल्हन रूप।
फागुन के अनुरूप ही,हुई चुलबुली धूप।।
रे भौंरे! अब आ इधर,मत धर रूप अघोर।
फागुन है,सावन नहीं,कलियाँ करती शोर।।
दिलबर पुश्प गुलाब-सा,अन्तर भरे सुवास।
रिश्तों को मुस्कान दे,सपनों को मधुमास।।
चुप्पी साधे हैं वही, जिसे नहीं अहसास।
साली जी का आगमन, सर्दी में मधुमास। ।

हँसी नदारत हो गई, लुप्त हुई मुस्कान।
सर्दी का ज्यों ही गया,साली जी पर ध्यान। ।
सर्दी में जब घूमते,कुहरे बने नवाब।
सत्तर की साली लगे,ताज़ा पुश्प-गुलाब।।
मधुबन से मधुमास की,चंचल मधुर बयार।
दिल में करती गुदगुदी,कर सोलह श्रृंगार। ।
अल्हड़पन की प्रीति का,मधुमासी अनुप्रास।
साली की व्याख्या करे,सरहज से परिहास। ।
साली सत्तर की हुई, जीजा उसके पार।
फागुन में होकर जवाँ,करें फागुनी वार।।

पत्नी पुश्प गुलाब है,साली हैं मकरन्द।
जिसके प्रेम-सुगन्ध से,मिले सदा आनन्द।।
फागुन उनके ही लिए, लाता मधुर बयार।
अगल-बगल जिनके सदा,साली हों दो-चार।।
दिल रोया,आँखें हँसी,रूठ गई मधु आस
साली से मिलने गए,मिले वहाँ पर सास।।
सुन सखि!तुझसे कह रही,हिय का प्रिय अहसास।
फागुन में पिय-प्रीत से,हुई पलाश पलाश।।

हे पिय!सुन हिय-बात को,मत बन अति नादान।
नयनो में मधुमास का,समझो प्रिय विज्ञान। ।
चितवन मधुर मिलाप की,मधुमासी अनुप्रास।
बिन बोले पिय प्रेम की,बनती मधुर सुवास।।

# साहित्य और समाज को समर्पित व्यक्तित्व डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी

**लखन प्रतापगढ़ी**

डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी एक संवेदनशील साहित्यकार हैं। अपने देश, समाज, पर्यावरण से आपका गहरा लगाव है। बच्चों के प्रति आपका प्रेम अगाध है। अतः आपके साहित्य सृजन का क्षेत्र व्यापक है। अपने निरन्तर तथा योजनाबद्ध लेखन के परिणाम स्वरूप आपने हिन्दी साहित्य जगत को कई पुस्तकें प्रदान की हैं जैसे 'श्मशान की कबीरी' , 'हँस दे मनवा' , 'चित्रगुप्त चालीसा' इत्यादि। इसके अतिरिक्त 100 से अधिक साझा संकलनों में आपकी कविताओं का संकलन हो चुका है। चंपक सहित अन्य कई बाल पत्रिकाओं में निरन्तर आपकी बाल कविताएँ एवं कहानियों का निरन्तर प्रकाशित होना ही आपकी प्रवीणता का बखान कर रहा है। बाल कविताओं का संग्रह 'कॉव-कॉव करता है कौआ' इसका प्रमाण है। बाल कविता लेखन सरल एवं सहज नहीं है। इसके लिए रचनाकार को बच्चा बनना पड़ता है, ऐसा बच्चा जो निश्छल,निश्कपट,मासूम हृदयी होता है। उसे बचपन में लौटकर जाना पड़ता है। लेखन के द्वारा बच्चों को आकर्शित करने के लिए ममतामयी हृदय चाहिए। बच्चों को बालगीत, कविता बाल्यकाल से ही पसन्द होती है, इसलिए माँ बच्चों को लोरी सुनाकर मीठी नींद सुल ाती है। बाल मनोविज्ञान को समझना आसान नहीं होता मगर डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी को इसमें महारत हासिल है। उनके काव्य संग्रह'कॉव-कॉव करता है कौआ' जिसमें रिश्ते हैं,मौसम हैं, फूल हैं, विज्ञान है, चन्दा की बातें हैं तो पशु-पक्षी की कहानी भी है, इनकी यह कविता बानगी के तौर पर देखें-

**भालू बोला बन्दर मामा**
**चलो करें हम सैर,**
**पिन्टू को भी संग बुला लो**
**सभी भुला कर बैर।**

पॉलीथीन नामक कविता में पर्यावरण के प्रति बच्चों को सचेत करते हुए कहते हैं-

**बच्चो! तजकर पॉलिथीन को**
**सुन्दर धरा बनाओ,**
**आलू, मटर, टमाटर,शलजम**
**झोले में ले आओ।**

डॉ॰ चित्रांशी की बाल रचनाओं को पढ़ने के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी रचनाएँ मात्र बच्चों का सरल मनोरंजन ही नहीं करतीं अपुति उनके मन-मस्तिश्क पर अमिट छाप छोड़ती हैं। कहते हैं तिनका-तिनका बिखेरे जीवन के चित्रों को हर कोण से देखने की लल क कवि को लघु से विराट बनाती है और उसकी अनुभूति सार्वभौम होकर सामाजिकता के हर रंग को नई पहचान देती है। चित्रांशी जी के दोहे इस कथन ही

**प्रतापगढ़ में एक कार्यक्रम में भाग लेते हुए।**

सत्यता को प्रमाणित करते हुए दिखाई देते हैं।
आपकी रचनाओं का आद्योपान्त पठन करने के बाद ऐसा महसूस होता है कि आपने जीवन के सामाजिक,आर्थिक, राजनैतिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में सजग दृश्टि से अवलोकन कर उसे शब्दों से चित्रित करने का प्रयास किया है इसीलिए इनकी रचनाएँ बड़ी ही ईमानदारी भरी आत्मीयता से उसके अंतरंग पक्षों का गहराई से साक्षात्कार कराते हैं। आपकी पकड़ भाशा और साहित्य पर तारीफेकाबिल है। आपने समय-समय पर कई पत्रिकाओं का संपादन भी किया है। 'कायस्थ कुल' पत्रिका आपके सम्पादकत्व में प्रकाशित हुई। इसके अतिरिक्त प्रतापगढ़ जनपद से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'पत्रकार सुमन' में सहायक संपादक तथा इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'सर्वोदय वार्ता' के कई अंक में अतिथि संपादक रहे। आपने साहित्य एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने हेतु ' साहित्यांजलि प्रज्योदि' नामक संस्था की स्थापना की और उसी के बैनर तले कवि-सम्मेलन, एवं साहित्यिक एवं पर्यावरण पर आधारित परिचर्चा का आयोजन करते रहते हैं। प्रतिवर्श निर्धन बच्चों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने तथा भारतीय संस्कृति से परिचित कराने के लिए, बाल मेले का भी आयोजन करते रहते हैं। साहित्यिक क्षेत्र में आपके उत्कृश्ट योगदान को देखते हुए, देश की कई संस्थाओं ने अलंकृत एवं पुरस्कृत किया है।

वर्तमान समय में डॉ॰ चित्रांशी अपनी सहधर्मिणी श्रीमति ज्योति चित्रांशी के साथ लूकरगंज,प्रयागराज में रहते हुए साहित्य-साधना में रत हैं। मैं आपके दीर्घ जीवन एवं आपकी कलम सदैव हम लोगों का मार्गदर्शन करती रहे,मंगलकमना करता हूँ।

**रामलखन प्रजापति 'लखन प्रतापगढ़ी'**
**संपादकः बच्चों की बगिया**
**सचिवः साहित्य संवर्धन संस्थान**
**जसरा, प्रयागराज**

**शहर समता - ब्यूरो प्रमुख**

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊशा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

**शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक ) के वार्शिक एवं तीन वर्शीय सदस्य बनें।**

**वार्शिक सदस्यता के लिए -200/-** **तीन वर्शीय सदस्यता के लिए -500/-**

**कृपया 'शहर समता' के नाम से चेक या आनलाइन भेज सकते है।**
IFSC Code- PUNB0100120 A/c.-1001050011592

**व्यवस्थापक**
शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक)
289/238 ए (अनंत भवन) कर्नलगंज ,इलाहाबाद-211002

पीडीफ़ के लिए
**shaharsamta.blogspot.com**
पर जाएँ ।

**संस्थापक**
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
*उमेश चन्द्र श्रीवास्तव*
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

# डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी यशस्वी साहित्यकार हैं

**डॉ॰ दयाराम मौर्य'रत्न'**

काव्याभिनन्दन

**कुशल चितेरे काव्य के,चिन्तक श्रेष्ठ 'प्रदीप'।**
**गद्य-पद्य सम्राट हैं, मानव महा महीप।।**
**'चित्रांशी' संज्ञा विमल, करते कार्य महान।**
**सरल-सहज व्यक्तित्व है,तनिक नहीं अभिमान।।**
**विविध विधा में कर रहे,भाँति-भाँति की सृष्टि।**
**वाणी में अमृत भरा, प्रेम-भाव की वृष्टि।।**
**लूकरगंज-प्रयाग में, है सुखमय आवास।**
**तिमिर मिटाते हैं सदा, प्रसरित करें प्रकाश।।**
**बालकथा-कविता सृजक, रचते चित्र अनेक।**
**अक्षर-अक्षर- शब्द के, देते ज्ञान -विवेक।।**
**तुलसी- सूर-कबीर के ,हैं ये अद्भुत मेल।**
**अलंकार-रस देवता, भाव- छंद का खेल।।**
**वायु-नीर-पृथ्वी गगन, संरक्षण पर जोर।**
**सुर-सरिता-पोखर,कुआँ, रहे स्वच्छ चहुँ ओर।।**
**'पर्यावरण बचाइए' कहते हैं दिन-रात।**
**दूशित वातावरण से, होता है आघात।।**
**मानवता हो हृदय में, मन में हो सद्भाव।**
**भेदभाव का विश मिटे, हो एका की छाँव।।**
**दुनिया एक कुटुम्ब हो, हो आपस में प्यार।**
**घृणा-द्वेश अब ना रहे, जुड़ें दिलों के तार।।**
**ऐसे मानव श्रेष्ठ का, वंदन बारम्बार।**
**हे 'प्रदीप' सूरज बनो, स्वप्न बने साकार।।**

यशस्वी साहित्यकार डॉ० प्रदीप कुमार चित्रांशी बहुमुखी लेखन प्रतिभा के धनी हैं। उन्होंने साहित्य की हर विधा में प्रवीणता से लिखा है। बिना थके,बिना रुके उनकी लेखनी सतत् गतिमान है। साहित्य के साथ-साथ शिक्षा,समाजसेवा, संस्कृति संरक्षण तथा धर्म प्रसार में अहिर्निश लगे रहते हैं। सरल-सौम्य स्वभाव वाले डॉ॰ चित्रांशी की वाणी मृदु है। वे हर मिलने वाले व्यक्ति का स्वागत मुस्कुराते हुए बड़ी आत्मीयता से करते हैं। जो उनसे एक बार मिल लेता है, वह सदा के लिए उनका हो जाता है। कुछ ऐसा ही मेरे साथ हुआ। लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार डॉ० अनिल सिंह 'शलभ' के माध्यम से मेरा उनसे परिचय हुआ। आज से लगभग २५ वर्श पूर्व परियावां में अन्तर्राज्यीय भाशायी एकता सम्मेलन का आयोजन हुआ था। उसमें प्रतिभाग के लिए मैं, डॉ॰ अनिल सिंह'शलभ' तथा डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी साथ गए थे। डॉ॰ चित्रांशी के साथ बस से यात्रा के दौरान तथा कार्यक्रम के मध्य वार्तालाप करने का पर्याप्त अवसर मिला। उनको जानने समझने का यह सटीक मौका था। उनकी सहृदयता तथा मानवीय संवेदनशील ता की सहज अनुभूति करके मैं उनसे बहुत संस्थान में अभियन्ता के पद पर कार्यरत रहे। प्रयागराज से मनकापुर जाते समय तथा वहाँ से प्रयागराज प्रभावित हुआ। तभी से हमारा-उनका अंतरंग पारिवारिक जुड़ाव हो गया, जो निरंतर न केवल आज तक चला आ रहा है, वरन् प्रगाढ़ता बढ़ती जा रही है। वे प्रयागराज के निवासी हैं। मनकापुर गोण्डा में आई टी आई लिमिटेड आते समय मार्ग में पड़ने वाले प्रतापगढ़ के मेरे आवास पर रुकते थे। प्रायः उनकी सहधर्मिणी भी साथ आती-जाती थीं। आतिथ्य का मौका पाकर मुझे तथा मेरे परिवार को खुशी का अनुभव होता था। आज भी मेरे साहित्यिक कार्यक्रमों में वे आते हैं तथा उनके साहित्यिक कार्यक्रमों में, मैं प्रतिभाग करता हूँ।

उनका काव्य-संग्रह 'श्मशान की कबीरी' पढ़कर मुझे उनके भीतर कबीर के दर्शन हुए। उनके पदों में संसार की निस्सारता बेबाक अभिव्यंजना तथा आत्मा-परमात्मा का गूढ़ चिन्तन इत्यादि तत्व उत्कृश्टता से रूपायित हैं।मेरा परिवार तीन पीढ़ियों से कबीर मतानुयायी रहा है। कबीर के विचार मेरे मन में रचेल्बसे हैं। उनके जैसे काव्य और निर्गुण दर्शन पाकर मैं धन्य हो गया। कबीर की भाँति ही डॉ० चित्रांशी के विचारों में भी वैज्ञानिकता है, उनकी सोच मेरी सोच से पूरी तरह मेल खाती है। उनका बाल काव्य संग्रह '' कॉव कॉव करता है कौआ'' जब मैंने पढ़ा तो उनमें मुझे महाकवि सूरदास की अनुभूति हुई। बाल संग्रह की बाल कविताओ में वात्सल्य-रस टपकता है। बाल मनोविज्ञान के सूक्ष्म अध्येता के रूप में वे पाठकों के समक्ष उपस्थित होते हैं। '' कॉव-कॉव करता है कौआ'' में बालोपयोगी अनेक प्रतीकों का चयन करते हुए डॉ० चित्रांशी ने रोचक ढंग से बच्चों को जीवनोपयागी शिक्षा दी है। काव्य संग्रह बाल साहित्य का महत्वपूर्ण काव्य-अभिलेख बन गया है। '' कॉव-कॉव करता है कौआ'' बालकाव्य-संग्रह की एक बालोपयोगी रचना की कुछ पंक्तियों का रसास्वादन कीजिए-

**''कौए को मत मारो बच्चों,कौआ सखा हमारा बच्चों;**
**कौए यदि मिट जाएंगे तो,धरा प्रदूशित होगी बच्चों।''**

'वृक्ष' शीर्शक वाली एक अन्य शिक्षाप्रद रचना का अनुशीलन कीजिए-

'' देव-दनुज मानव किन्नर का जीवन भी नित्य वृक्ष सँवारें इन सबके कारण ही बच्चों पूज्य हुए ये वृक्ष हमारे।।''

बालकाव्य संग्रह में एक से बढ़कर एक उत्कृश्ट रचनाएँ हैं। विविध विशयों पर रचनाएँ लिखकर डॉ० चित्रांशी ने बच्चों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास की शिक्षण-सामग्री उपलब्ध कराई है। 'श्मशान की कबीरी' जिसमें, जन्म,मृत्यु के मध्य का जीवन,लोक-परलोक तथा निर्गुन पारब्रह्म का चित्रण किया गया है,की एक रचना पठनीय है,इस रचना को पढ़कर क्या अनुभूति होती है,स्वयं अनुभव करिए-

**'' देखो कैसे जरत शरीरा।**
**गंगा-तट के दृश्य देखने,काँधे पर चढ़ि आय शरीरा।**
**कोउ नहिं अपना सभी पराए,विलग हुआ तन हीरा।**
**परिजन मिलकर चिता बनाते, जिस पै धरैं शरीरा।**
**सोच रहा है जीव गगन में, होकर मलिन अधीरा।**
**दुनिया में नहि कोऊ ऐसा, जिसका अमिट शरीरा।**
**इक दिन तो सबका चित्रांशी, धू-धू जरै शरीरा।।''**

उक्त पद का अवगाहन करके यह संसार निरर्थक लगता है। संसार में रहकर मनुष्य न जाने कितने पाप करता है,जबकि जीवन की अन्तिम परिणति बड़ी भयावह है। सह रचना मनुष्य को वैराग्य की ओर उन्मुख करती है। गुरु की महत्या रेखांकित करने वाली डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी की कुंडलियाँ कालजयी हैं-

**'' जीवन में प्रभु-धन मिले, चिंतित मन मुस्काय**
**मन का आलस छोड़कर, शरण गुरु की आय**
**शरण गुरु की आय, करे जो पूजा-अर्चन**
**उनका ले आशीश, करे जो सदगुण अर्जन**
**है प्रदीप का कथन, वही नर होता सज्जन**
**उसका ही अविलम्ब,सफल होता है जीवन।''**

डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी में अभूतपूर्व सृजनशीलता है। भाशा,भाव तथा शैली में भी मौलिकता है। विशय वैविध्यपूर्ण हैं जहाँ एक ओर उन्हें भारतीय संस्कृति तथा परम्पराओं से लगाव है, कहीं दूसरी ओर वे प्रगतिशील विचारधारा के पोशक भी हैं। उन्होंने सामाजिक विसंगतियों पर करारा प्रहार किया है। समाज सुधारक के रूप में उन्होंने समाज में व्याप्त रूढ़ियों-कुरीतियों का विरोध भी किया है। वे जातीयता और वर्णवाद के विरुद्ध मुखर रहते हैं। हास्य या हल्के-फुल्के विशयों पर उन्होंने कभी कलम नहीं चलाई। गद्य हो या पद्य हो, उनकी रचनाएँ गाम्भीर्ययुक्त तथा सन्देशपरक होती हैं। 'चित्रगुप्त चालीसा' एक पौराणिक पुस्तिका है। इस पुस्तिका के दोहे और चौपाइयाँ मात्राबद्ध और गेय हैं। इस कृति को पढ़कर मैं बहुत प्रभावित हुआ।

डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी में लेखन की प्रतिभा नैसर्गिक है। जब भी कलम उठाते हैं, कोई न कोई उत्कृश्ट साहित्यिक रचना जन्म लेती है। हिन्दी काव्य की हर विधा-दोहा,चौपाई,कुंडलियाँ तथा मुक्तक के महारथी हैं। अपने समाजोपयोगी, सार्थक तथा सारगर्भित लेखन के लिए वे साहित्य-जगत में बहुत चर्चित हैं।उनकी हर रचना में कोई न कोई शिक्षा होती है,जिसमें व्यक्ति तथा व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

हिन्दी खड़ी बोली के अलावा वे उर्दू तथा अवधी भाशाओं में लेखन करते हैं।अवधी की काव्य-रचनाओं में उन्होंने खाँटी अवधी शब्दों का प्रयोग किया है। अवधी रचनाओं में अवध क्षेत्र के खान-पान, पहनावा,तीज-त्योहार,गीत-संगीत,हँसी-ठिठोली तथा बसन्त-बहार का वास्तविक चित्र खींचा है। अवधी क्षेत्र के मुहावरों को लेखन में सम्मिलित करते हुए, यहाँ के ठाट-बाट-ठसक को भी जीवन्त किया है। विज्ञान तथा आधुनिकता के बढ़ने से समाज में आए परिवर्तन पर उनकी अवधी-रचना की अग्रलिखित पंक्तियाँ द्रश्टव्य हैं-

**'' बिन गोबर के गोबर होइगा, मनई अउर फसल।**
**लकड़ी के बिन चुल्हवउ बुझिगा,मनई गवा बदल।।**
**डेरिया वाला दूध बिकत बा, बनके आज गरल।**
**घाघ कहावत भूल गएन सब, नाही करत अमल।।''**

गाँव में होने वाले प्रधान पद के चुनाव को उन्होंने हूबहू चित्रण किया है-

**''पढ़े-लिखे संग अनपढ़ सारे**
**लड़त रहेन परधानी**
**जेकरे हाथे चाकू छूरी**
**ओकर भागि टेटानी**
**अजब रहा परधानी भइया,**
**अजब रहा परधानी।''**

अन्य ऐसी अनेक रचनाएँ हैं,जिसमें अवध क्षेत्र में बोले जाने वाले ठेठ अवधी शब्दों का प्रयोग किया गया है। उनकी अवधी रचनाएँ डा॰ दयाराम मौर्य'रत्न' द्वारा संकलित काव्य-संकलन 'चन्दा-चकोर' में संग्रहित है। उनके समस्त लेखन पर यदि मूल्यांकनपरक आलेख लिखे जायँ तो उसे पुस्तकाकार रूप देना पड़ेगा। कुछ पन्नों में तो सार-संक्षेप ही दिया जा सकता है। ऐसे आलेख में उनके जीवन-कृतित्व के अंशों को ही मैं कसावट के साथ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

अब मैं उनके द्वारा सृजित बहुमूल्य दोहों की चर्चा करूँगा। मैं उन्हें दोहा सम्राट मानता हूँ। अब तक उन्होंने सात हजार से अधिक दोहे लिखे हैं। शीध्र प्रकाशित होने वाले उनके दोहा संग्रह का नाम 'अन्तर्यात्रा' है। प्रकाशन के पूर्व ही उनके दोहे फेसबुक, यू-ट्यूब तथा व्हाट्सएप इत्यादि सोशल मीडिया पर खूब पढ़े और सराहे जा रहे हैं। दोहों पर बड़ी संख्या में सकारात्मक टिप्पणियाँ दोहों की अर्थक्या तथा गुणक्या का स्वयं बयान करनी हैं। विविध-विशयक इनके दोहे पढ़कर नैतिकता की शिक्षा मिलती है। दोहा विधा में उनकी गणेश-वन्दना बहुत सुन्दर बन पड़ी है-

**''मोदकप्रिय सुन लीजिए,विनति हमारी आज।**
**दोहो के हर शब्द में, हो दर्पण- आवाज।।**
**हे गणपति! अर्पित करूँ,अपना प्रथम प्रयास।**
**मोदक-सा हर शब्द में, भर दे मधुर मिठास।।''**

उपर्युक्त आस्थापूर्ण दोहों वाली गणेश-वन्दना से दोहा-संग्रह 'अन्तर्यात्रा' का शुभारम्भ हुआ है। वर्तमान में जिस प्रकार नैतिक मूल्यों में ह्रास हो रहा है,चिन्तनीय है। व्यक्ति-व्यक्ति अपने स्वार्थ को सिद्ध करने में संलिप्त है। सामाजिक-पारिवारिक सम्बन्ध टूट रहे हैं। माता-पिता तथा अन्य श्रेष्ठजनों का मान घटता जा रहा है। समाज-परिवार से बुजुर्ग अलग-थलग हो गए हैं। बड़ी संख्या में निराश-हताश वृद्धजनों को वृद्धाश्रमों में शरण लेनी पड़ रही है। ऐसी स्थिति को बदलने के लिए डॉ॰ चित्रांशी आतुर हैं। 'मातु-पिता प्रणाम' शीर्शकयुक्त दोहे माता-पिता के प्रति संवेदना जागृत करने में निश्चित ही कारगर सिद्ध होंगे। कुछ दोहे प्रस्तुत हैं-

**''मातु-पिता गुरु हैं सभी,दुनिया में अनमोल।**
**धर्मग्रन्थ कहते यही, और साधु के बोल।।**
**मातु-पिता का छू चरण, पाएँ उनसे ज्ञान।**
**उनके ही सद्ज्ञान से, दूर रहे अभिमान।।**
**मातु-पिता बनते रहे, सदा हमारी छाँव।**
**उनके बिन संभव नहीं,मिले जगत में ठाँव।।''**

दोहा-संग्रह 'अन्तर्यात्रा' के आरम्भ में 'गणेश-वन्दना', 'मातु-पिता प्रणाम' तथा 'गुरु नमन' विशयक दोहो को क्रम से रखने का कार्य सुकवि डॉ॰ चित्रांशी द्वारा गंभीरतापूर्वक सोच-समझकर किया गया है। मूलपरक दोहों के अनुशीलन से नैतिकता तथा कर्तव्य-भावना के क्षरण को रोका जा सकेगा। गुरु के महत्व को रेखांकित करने वाले दोहे आत्मसात करने योग्य हैं-

**''गुरु ही ईश समान हैं, घर उनका हरि धाम।**
**हर युग में गुरुकुल गए, कृष्ण और बलराम।।**
**गुरु शरण में जाइए, तजकर सब अभिमान।**
**सुन्दर जीवन पाइए, भरकर मन में ज्ञान।।**
**अभिमानी जब से गया, गुरु की पावन छाँव।**
**दानी बनकर कर्ण सा,देता सबको ठाँव।।**
**गुरु बिन जीवन व्यर्थ है, कहता मित्र प्रदीप।**
**इनके आशीर्वाद से, कश्ट रहे न समीप।।''**

डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी ने हिन्दी खड़ी बोली तथा अवधी बोली में कहानियाँ भी लिखी हैं, जो हिन्दी-अवधी साहित्य-जगत में बहुत चर्चित हैं। उनकी कहानियाँ अवध क्षेत्र के साथ-साथ भारतीय समाज का अक्स हैं।समाज में मानव स्त्री-पुरुश के जटिल ताने-बाने को शब्दों में चित्रित करके उन्होंने खुद को हिन्दी-साहित्य के बड़े कथाकारों में शामिल कर लिया है। विशय-क्षेत्र के चिह्नांकन,संवादो के निर्माण एवं पात्र चयन के कौशल के बल पर उनकी कहानियाँ प्रभावशाली होती हैं।कहानियों की भाशा सरल,सहज तथा सुबोध है। दैनिक बोलचाल के हिन्दी, अवधी तथा उर्दू शब्दों के प्रयोग से कहानियाँ रोचक और ग्राह्य हो गई हैं। उनकी कहानियों का पाठक यह महसूस करता है कि कहानियों की घटनाएँ और पात्र उनके आस-पास से ही हैं। उनके कहानी लेखन का उद्देश्य समाज को अच्छी दिशा देना है। उनके कथा लेखन की उत्कृश्टता के सबूत के रूप में मैं उनकी कहानी 'वास्तविक परम्परा' का सन्दर्भ दे रहा हूँ। कथा के मुख्य पात्र रामेश्वर हैं। वे ग्रामीण परम्पराओं और संस्कृति के संरक्षण के लिए संकल्पित हैं। रामेश्वर के बेटे और पुत्रवधु उनसे नगर में रहकर सुख-सुविधा का जीवन जीने का आग्रह करते हैं। रामेश्वर को गाँव से इतना लगाव था कि वे नगर नहीं गए। नगर गए भी तो कुछ दिनों के पश्चात वापस गाँव आ गए। अपने त्याग और सेवाभाव से वे ग्रामवासियों की दृश्टि में देवता बन गए। उन्होंने गाँव में प्राइमरी पाठशाला की स्थापना की। धीरे-धीरे उच्चीकृत करके उसे महाविद्यालय का रूप दे दिया। भारतीय संस्कृति से परिचित कराने के लिए उन्होंने वैदिक स्कूल की भी स्थापना की। अध्ययन के प्रति रुचि जगाने के लिए उन्होंने पुस्तकालय का निर्माण कराया। शिक्षेत्रयन तथा सामाजिक जागरण के लिए उन्होंने वाचनालय तथा अन्य संस्थाएँ बनाई। उनका दृढ़ संकल्प रंग लाया। उनके बेटे-बहू तथा पौत्र- पौत्री ने गाँव में आकर रहने का मन बना लिया। इस कथा से यही संदेश मिलता है कि भारतीय गाँव तथा वहाँ की संस्कृति के संरक्षण से भारत और भारतीयता अक्षुण्ण होंगे। यह कहानी इतनी रोचक है कि पाठक जब पढ़ना शुरू करता है तो पूरा करके ही दम लेता है।

मेधावी साहित्यकार डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी में लेखन की प्रतिभा जन्मजात है। उनकी विविध रचनाएँ अब भी १०० से अधिक साहित्यिक संकलनों में प्रकाशित हो चुकी हैं। दैनिक समाचार पत्र अमृत प्रभात समेत अन्य राश्ट्रीय समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ और आलेख प्रकाशित होते रहने हैं। पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन के साथ-साथ साहित्यकारों की कृतियों के मूल्यांकन का कार्य भी वे पूर्ण दक्षता से करते हैं। प्रायः अनेक साहित्यकार अपनी कृतियों की भूमिका-समीक्षा उनसे लिखवाते हैं। उन्होंने कई साहित्यिक-सामाजिक संस्थाओं की स्थापना की है। उनकी संस्था 'साहित्यांजलि प्रज्योदि' पूरे देश में अपने साहित्यिक-पर्यावरणीय कार्यो के लिए जानी जाती है। पर्यावरण के संरक्षण में भी उनका अभूतपूर्व योगदान है। संगमनोज प्रयागराज में उनके द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन व मुशायरे में पूरे देश के साहित्यकार काव्य-पाठ के लिए आते हैं। 'साहित्यांजलि प्रज्योदि' के बैनर तले होने वाले प्रतिष्ठित कवि सम्मेलनों में मुझे भी सहभाग का अवसर मिला है। वहाँ मुझे शानदार सम्मानों से नवाजा भी जा चुका है।

अभी तक वे अनेक विलक्षण कार्यक्रम कर चुके हैं। वे नवोन्मेशी हैं। नुक्कड़ काव्य-गोष्ठियाँ करके वे नगरो-गाँवों के कोने-कोने में सृजनशीलता बढ़ाते रहते हैं। नगरों-गाँवों के नुक्कड़ों पर वे कुछ कवियों को बुलाते हैं और काव्यपाठ के माध्यम से समाज में जागरूकता उत्पन्न करते हैं। उनके द्वारा सम्पन्न एक अद्वितीय-अविस्मरणीय आयोजन में प्रतिभाग करके मैं धन्य हो गया। संगम-नोज पर गंगा-यमुना के प्रवाह में उन्होंने दो नावों पर पर्यावरण-संरक्षण का संदेश देने के लिए कवि सम्मेलन व मुशायरा किया था। प्रतापगढ़ से मैं और डॉ॰ अनिल सिंह 'शलभ' काव्यपाठ व उद्बोधन करके नाव पर होने वाले इस अनोखे आयोजन के स्वर्णिम इतिहास में अमर हो गए।

लूकरगंज, प्रयागराज स्थित डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी का आवास 'साहित्यपीठ' के रूप में जाना जाता है। देश-प्रदेश के साहित्यकारों का आना-जाना पूरे वर्श लगा रहता है।काव्य-विचार संगोष्ठियों का आयोजन डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी करते रहते हैं। समय-समय पर पुस्तकों का लोकार्पण भी होता है।महापुरुशों की जयन्ती-पुण्यतिथि भी मनाई जाती है। इन विविध आयोजनों से समाज में चेतना का प्रसार होता है। साहित्यकारों तथा अन्य विशिश्ट कार्य करने वाले महानुभावों को उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए सम्मानित-पुरस्कृत भी किया जाता है। साहित्य और चेतना के तीर्थ उनके आवास के कार्यक्रमों में मैंने भी अनेक बार सहभागिता की है।

लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी का जन्म एक ०१जुलाई सन् १९५७ को ग्राम करुआडीह ,प्रतापपुर,हंडिया, इलाहाबाद(प्रयागराज) में हुआ था। ऐसे योग्य तथा होनहार पुत्र प्रदीप चित्रांशी को जन्म देकर माता श्रीमती कृष्णा श्रीवास्तव तथा पिता बजरंग नारायण श्रीवास्तव धन्य हो गए। बाल्यकाल से ही डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी का स्वभाव चिन्तनशील था।पढ़ाई-लिखाई में अव्वल रहे। उनकी उपलब्धियों में उनकी सहधर्मिणी श्रीमती ज्योति चित्रांशी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सुपुत्री का नाम दिव्या चित्रांशी मल्होत्रा है तथा संजय मल्होत्रा उनके दामाद हैं। चार वर्शीय नाती विवान पर उन्होंने कई बाल रचनाएँ लिखी हैं। उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए देश की जानी-मानी संस्थाओं ने उन्हें साहित्रत्न, विद्यावाचस्पति समेत अब तक ५० से अधिक सम्मानों-पुरस्कारों से नवाजा है। वे 'साहित्यांजलि प्रज्योदि' संस्था के अध्यक्ष हैं। आकाशवाणी से उनकी वार्ताएँ-विचार प्रसारित होते रहे हैं। मैं अपने को बहुत सौभाग्यशाली मानता हूँ कि वे मुझे अपना मित्र मानते हैं।

हिन्दी साहित्य के अनमोल रत्न डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी एक सच्चे इन्सान हैं। उनके सृजन और व्यक्तित्व पर और बहुत कुछ लिखा जा सकता है। मैं उनके समुज्ज्वल भविश्य,सुखमय जीवन तथा गौरवशाली कृतित्व की कामना करता हूँ। तथास्तु!

**पूर्व प्राचार्य,सह जिला विद्यालय निरीक्षक,**
**सदस्य-प्रथम श्रेणी न्यायिक मजिस्ट्रेट**
**न्याय बाल कल्याण समिति प्रतापगढ़**
**निवास- सृजनाकुटीर,अजीत नगर,प्रतापगढ़**

## डॉक्टर प्रदीप चित्रांशी की बाल कहानी

# छल और विश्वास

रात को बच्चों के साथ भोजन करने के पश्चात्,छत पर टहलते हुए,दादा जी ने कहा-' मैं कल गाँव वापस जा रहा हूँ, इसलिए आज मैं जल्दी ही सोना चाहता हूँ।तुम लोग भी जाकर सो जाओ।' नहीं ,हम सब अभी नहीं सोएँगे और कल आपको गाँव भी नहीं जाने देंगे।हम सभी का स्कूल तीन दिन के बाद खुलेगा,आप उसके बाद ही जाइएगा,पिंकी ने कहा। पिंकी की हाँ में हाँ मिलाते हुए, मुन्नू ने कहा -''पिंकी ठीक ही कह रही है दादा जी।'' बच्चों के मोह में आकर दादा जी ने कहा ठीक है,मैं तीन दिन के बाद ही जाऊँगा।चलो,अब चलकर सोते हैं।नहीं,पहले आप हम लोगों को कहानी सुनाएँगे,कहानी सुने बग़ैर हम लोग सोने नहीं जाएँगे।ठीक है भाई,तुम लोगों के ज़िद के आगे मैं हारा,दादा जी ने हँसते हुए कहा।चलो कमरे में चलते हैं,बिस्तर पर बैठकर,मैं कहानी सुनाऊँगा।ठीक है दादा जी,पिंकी ने कहा।बिस्तर पर बैठने के बाद दादा जी ने कहा कि वह आज उन लोगों को जानवरों की कहानी सुनाएँगे।

बहुत समय पहले की बात है,जब धरती पर बहुत बड़े-बड़े जंगल हुआ करते थे। जंगल में छोटे-बड़े बहुत से पशु-पक्षी रहा करते थे। सभी एक दूसरे से बहुत प्यार किया करते थे लेकिन शेर का मंत्री लक्खू सियार बहुत चालाक और दुश्ट था, वह दिन-रात शेर से झूठ-मूठ ही जंगल वासियों की शिकायत कर,उन्हें डाँट खिलवाया करता था। सभी जानवर उससे बहुत परेशान रहते थे लेकिन कोई उसका कुछ नहीं कर पा रहा था। उसी जंगल में हरशू घोड़ा,चिंकू खरगोश,पिंकू बकरा ,मीतू हिरण और कालू कौआ भी रहते थे।इन सभी के बीच में बहुत गहरी मित्रता थी।जंगल के अन्य जानवरों में भी ये सभी लोकप्रिय थे क्योंकि जानवरों पर जब भी किसी तरह का संकट आता था,ये सब संकट के लिए यमराज बनकर खड़े हो जाते थे।इसकी जानकारी लक्खू सियार को थी।वह दिन-रात इस ताक में रहता था कि किसी तरह से इन पाँचों की मित्रता में फूट डाली जाए,कोशिश भी करता था लेकिन हर बार मुँह की खानी पड़ती थी।जंगल के राजा शेरू शेर को भी मालूम था कि जंगल के हित में ही ये सारे दोस्त काम करते हैं इसीलिए लक्खू के भड़काने पर भी इन सब के खिलाफ़ कोई शिकायत सुनने को तैयार नहीं होता था।इन्हीं के कारण जंगल के सभी प्राणी एक सूत्र में बँधे थे।जब भी कोई शिकारी जंगल में शिकार हेतु आता तो कौआ काँव-काँव करता हुआ,जंगल के सभी प्राणियों को उसके आगमन की सूचना देकर,सभी को सतर्क कर देता था तथा घायल एवं बीमार जानवरों के लिए,अपनी चोंच में जड़ी-बूटी भरकर अस्पताल में पहुँचाता था।पिंकू बकरा तथा मीतू हिरण अस्पताल में मरीजों की सेवा-शुश्रूशा किया करते थे।चिंकू खरगोश बच्चों को पढ़ाता था। हरशू घोड़ा पहलवानी के साथ-साथ अपने मित्रों के लिए, खाने-पीने का इन्तज़ाम करता था।

सबकुछ बहुत अच्छा चल रहा था। जंगल में चारो तरफ शान्ति ही शान्ति थी कि अचानक जंगल में डुगडुगी बजाते हुए, गबरू बैल ने कहा- सुनो सुनो, जंगलवासियों सुनो। कल दोपहर दो बजे शेरू शेर ने सबको अपने दरबार में बुलाया है।दूसरे दिन सभी जंगलवासी शेरू के दरबार में इक्कठे हो गए तब शेरू शेर सबके सामने आकर कहने लगा कि मेरे जंगलवासियों ,हाल ही में जंगल से कुछ जानवर गायब हो गए हैं ,मैंने उन्हें बहुत ढूँढा लेकिन उनका कुछ पता नहीं चल पा रहा है। आप लोगों से विनती है कि सतर्क रहें तथा किसी तरह की जानकारी मिल ने पर लख्खू सियार को बताएँ जिससे जंगल को हम सुरक्षित कर सकें। शेर अपनी बात कहकर वापस चला गया। सभी जंगलवासी अपने-अपने घर, इस गम्भीर विशय पर चर्चा करते हुए,वापस चले गए। अपने घर लौटकर हरशू घोड़ा,चिंकू खरगोश,पिंकू बकरा ,मीतू हिरण ने कालू कौए से कहा कि वह लख्खू सियार पर ध्यान रखे क्योंकि उन्हें लगता है कि इसमें कहीं न कहीं लख्खू सियार का हाथ हो सकता है। लख्खू सियार भी जानता था कि अब इन लोगों से बचकर काम करना थोड़ा मुश्किल होगा। यही सोचकर वह भी इन लोगों पर निगाह रखने लगा।

जंगल में सबकुछ ठीक चल रहा था कि अचानक एक ऐसी घटना घटी कि सियार की बन आयी। अस्पताल में एक साथ बारह बच्चों की मृत्यु हो गई। लख्खू सियार ने जंगल में अपने विश्वासपात्रों के माध्यम से पिंकू बकरा ,मीतू हिरण और कालू कौआ के खिलाफ जंगल में एक ऐसी हवा फैला दी कि पूरा जंगल इनके खिलाफ हो गया और सबको लगने लगा कि इन्हीं की लापरवाही से बच्चे मरे हैं। शेरू शेर के पास शिकायत पहुँची ,सभा बुलाई गई, लख्खू सियार ने कहा -''महाराज इससे पहले भी ऐसी घटनाएँ होती रही हैं जिससे मैं आपको अवगत कराता रहा हूँ लेकिन आपको विश्वास नहीं होता था।इस जंगल में हरशू घोड़ा को छोड़कर,इन चारों ने अराजकता फैला रखी है। पिंकू खरगोश पढ़ाने के बहाने बच्चों को मारता है और उनके खून से व्यापार करता है।इन सभी के गुनाहों को देखते हुए, इन्हें मौत की सजा देनी चाहिए।'' लख्खू सियार के चुप होते ही भीड़ चिल्ला पड़ी- ''इन्हें मौत की सजा दीजिए, सिर्फ मौत।''शेरू शेर ने हरशू घोड़े से पूछा- ''क्या ये लोग अस्पताल में कल एक साथ थे?'' हरशू घोड़े ने कहा-'हाँ, लेकिन--।'' ठीक है, अब मैं समझ गया कि जिन्हें मैं जंगल का हितैशी समझता था ,वे सब गद्दार निकले।मैं इन चारों को मृत्युदण्ड देता हूँ। इतना सुनकर हरशू घोड़ा बेहोश हो गया। पिंकू बकरा और चिंकू खरगोश भाग निकले तथा कालू कौआ उड़ गया। मीतू हिरण को मारकर,लख्खू सियार ने दावत उड़ाई।

हरशू घोड़े को जब होश आया, उसकी पूरी दुनिया बदल चुकी थी।वह बुझे मन से घर आया और हफ्तों घर से बाहर नहीं निकला। लख्खू सियार अपने दल-बल के साथ हरशू के घर आया और उसे विश्वास दिलाता रहा कि उसका कोई दोश नहीं है, सब समय का दोश है। चलो, खाना खालो और थोड़ा मेरे साथ घूम टहल लो, मन बहल जाएगा। लख्खू सियार की चाल को हरशू घोड़ा समझ नहीं सका और उसके साथ टहलने निकल पड़ा। पिंकू बकरा, हरशू घोड़े से मिलने उसके घर जा रहा था मगर उसे लख्खू सियार के साथ देखकर गुस्से से पागल होकर, उसने दोनों पर आक्रमण कर उन्हें घायल कर दिया। लख्खू सियार जिस अवसर की तलाश कर रहा था,वह खुद ही चलकर उसके द्वार तक आ गया। अब उसने पिंकू बकरा के खिलाफ आग उगलते हुए,हरशू घोड़े से कहा कि जिसे तुम अपना मित्र कहते हो,वह तुम्हारी जान लेना चाहता है।हरशू घोड़े ने कहा-'' कैसा मित्र? मेरा बस चले तो मैं उसे जान से मार दूँ।गरम तवे को देखकर लख्खू सियार ने कहा कि मैं तुम्हारा मित्र हूँ, तुम्हारे ही हित की बात करता हूँ।चलो तुम्हारा परिचय मैं उस शिकारी से करवाता हूँ,जिसका एक बाण ही पिंकू बकरे के लिए काफी है।

लख्खू सियार ने हरशू घोड़े का परिचय शिकारी से करवाया और कहा कि इसका एक दुश्मन है, पिंकू बकरा।उसी को मारने के लिए आपकी सहायता चाहते हैं। शिकारी ने कहा कि वह उसकी मदद करने के लिए तैयार है लेकिन इसके लिए, मुझे इसकी नाक में रस्सी डाल कर, इसकी पीठ पर बैठना पड़ेगा।हरशू घोड़े ने शिकारी की शर्त मान ली।शिकारी हरशू घोड़े की पीठपर सवार होकर जंगल में पिंकू बकरे के शिकार के लिए चल पड़ा। दो दिन बाद ही पिंकू बकरा जंगल में घास चरते हुए दिख गया। हरशू ने शिकारी को इशारा किया और शिकारी ने पिंकू बकरे का काम तमाम कर दिया। पिंकू बकरे का शिकार करने के बाद शिकारी ने उसे हरशू घोड़े की पीठ पर लादते हुए कहा कि तुम मुझे घर तक छोड़ दो। घर पहुँचाकर हरशू घोड़े ने,शिकारी को धन्यवाद देते हुए,जंगल जाने की इज़ाज़त माँगी। शिकारी ने कहा- अब तुम मेरे गुलाम हो और केवल मेरी सेवा करने के बारे में सोचो।थोड़ी ही दूर पर हरशू घोड़ा पतीले में पकते हुए पिंकू बकरे को देखता रहा और अभी परिस्थितियों को समझने की कोशिश कर ही रहा था कि उसे आभास हुआ जैसे पिंकू बकरे ने उसे आवाज देकर कहा कि मित्र तुम लख्खू सियार की चाल नहीं समझ सके ,इसीलिए मैं शहीद हो गया और तुम गुलाम।

## डॉक्टर प्रदीप चित्रांशी की बाल कहानी

# देर है अन्धेर नहीं

चंपक वन में खरगोशों की बस्ती में हरिया नाम का एक खरगोश रहता था। वह बहुत सीधा एवं सरल स्वभाव का था।उसकी शादी नंदन वन की सुन्दरी खरगोश से हुई थी।सुन्दरी खरगोश अपने नाम के अनुरूप ही सुन्दर थी।शादी से पहले हरिया खरगोश की एक छोटी सी चाय की दुकान थी।उस दुकान से उसकी इतनी आमदनी हो जाया करती थी कि परिवार का खर्च आसानी से चल जाता था लेकिन भविश्य के लिए कोई बचत नहीं हो पाती थी।सुन्दरी खरगोश हरदम यह सोचती रहती थी कि उसके पति की मेहनत में कोई कमी नहीं है लेकिन बचत के नाम पर हम शून्य ही रहते हैं। यही सोचते-सोचते उसे ख्याल आया कि यदि चाय के साथ-साथ समोसा और जलेबी भी बनाकर बेचेंगे तो हम लोगों को कुछ अधिक लाभ होगा और भविश्य के लिए बचत करना भी संभव हो पाएगा।

रात में दुकान से फुर्सत पाकर हरिया खरगोश जब घर आया तो सुन्दरी खरगोश ने उसे अपने विचारों से अवगत कराया। सुनने के बाद,कुछ देर तक हरिया खरगोश सोचता रहा कि समोसा बनाएगा कौन? मुझे तो बनाना आता नहीं।सुन्दरी खरगोश ने हरिया खरगोश के मन की बात को समझते हुए कहा कि मैंने अपनी माँ के साथ घर में खाने के लिए बनाया था इसीलिए समोसा मैं बना लूँगी और जलेबी भी बनाने की कोशिश करूँगी।दोनों इस विशय पर बात करते-करते कब सो गए,उन्हें पता ही नहीं चला।

दूसरे दिन सुन्दरी खरगोश ने सुबह-सुबह हरिया खरगोश को समोसा और जलेबी खाने के लिए दिया तो वह खुशी से उछल पड़ा।खाने के बाद उसने कहा कि दोनों ही चीजें ब़हुत स्वादिश्ट हैं लेकिन तुम अकेले कैसे बनाओगी? सुन्दरी खरगोश ने कहा कि आप परेशान नहीं हों, मैं सब कर लूँगी।बस आप अपनी सहमति दें।हरिया खरगोश ने कहा,'' ठीक है, सोमवार से हम लोग समोसा और जलेबी भी बेचेंगे''।

सोमवार को सुबह जब दुकान खुली तो नियमित चाय पीने वाले ग्राहक को उसने मुफ्त में समोसा तथा जलेबियाँ खिलाईं। सभी लोगों ने समोसा तथा जलेबी खाने के बाद खूब तारीफ की। धीरे-धीरे हरिया खरगोश के समोसे की चर्चा पूरी बस्ती में होने लगी। हरिया खरगोश अब सेठ की तरह दुकान में बैठा करता था। काम करने के लिए दुकान में कई नौकर-चाकर थे। मकान भी एक मंजिला से तीन मंजिला बनवा लिया। भगवान की कृपा से उसके पास सुख-सुविधा की सारी चाज़ें थीं।उन्हें केवल एक ही दुख था कि उनकी अपनी कोई सन्तान नहीं थी।इसी दुख के कारण वह कभी- कभी जीवन से निराश हो जाया करते थे।जब कभी अधिक निराश होते ,तब अपने मित्र लम्बू हिरण और मोनू खरगोश से बातें करते। लम्बू हिरण सदैव यही कहता था कि ईश्वर पर विश्वास रखो। निराश मत हो। वह बहुत कृपालू हैं।एक दिन जरूर वह भाभी की गोद नन्हे-मुन्ने हरिया से भर देंगे।वहीं मोनू खरगोश उसे और निराश करता रहता था क्योंकि वह बहुत ही धूर्त और चालाक था।उसकी भी उसी बस्ती में मिठाई की दुकान थी। मिठाई की दुकान में वह समोसे भी बेचता था लेकिन जबसे हरिया खरगोश ने समोसा बेचना शुरू किया तो उसका समोसा बिकना कम हो गया।समोसे की बिक्री कम होने के कारण ही उसने हरिया से बदला लेने के लिए,उससे मित्रता की ताकि वह जान सके कि वह समोसे में क्या मिलाता है,जिससे हरिया खरगोश के समोसे की ज्यादा बिक्री होती है। उसकी इस कुटिलता को सीधा-साधा हरिया समझ नहीं पाया था,इसीलिए वह अपने मन की सारी बातें,उसे बता दिया करता था।उसके इसी सीधेपन का लाभ उठाकर एक दिन मोनू खरगोश ने हरिया खरगोश से कहा, ''यार मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे बेटे को अपना पुत्र समझकर अपनी दुकान में रखकर उसे समोसा बनाना सिखा दो जिससे तुम्हारी कला को वह जीवित रख सके।'' हरिया खरगोश ने कहा कि यह तो अच्छी बात है,उसके आने से मेरा भी भार कम होगा।तुम उसे कल से ही भेज देना।

लम्बू हिरण ने जब सुना कि हरिया खरगोश ने मोनू खरगोश के लड़के को दुकान में आने के लिए कह दिया है,वह बहुत परेशान हो गया। उसने हरिया खरगोश से तो कुछ नहीं कहा, लेकिन सुन्दरी खरगोश से सब कुछ बताते हुए, सतर्क रहने के लिए कहा।सुन्दरी खरगोश ने लम्बू हिरण को समय रहते सचेत करने के लिए धन्यवाद दिया।

समय बीतता रहा। दुकान में मोनू खरगोश के बेटे ने अपने काम के बदौलत हरिया खरगोश का दिल जीत लिया था। अब हरिया खरगोश कोई भी कार्य करता तो मोनू खरगोश के बेटे से जरूर सलाह लेता था।एक दिन हरिया खरगोश की दुकान पर कुछ साधु पधारे। हरिया खरगोश ने उन्हें अपने घर पर खाने के लिए आमन्त्रित किया।साधुओं ने उसका आमन्त्रण स्वीकार कर, उसके घर पर पधारे। भोजन करने के बाद उन लोगों ने दोनों को आशीर्वाद देते हुए कहा,''बेटा तुम लोग एक वर्श तक यह स्थान छोड़कर देव स्थान पर रहो। हरि चाहेंगे तो तुम्हारी हर इच्छा पूरी होगी।साधुओं के चले जाने के बाद,दोनों ने एक वर्श तक देव स्थान पर रहने का निर्णय लिया। मोनू खरगोश और लम्बू हिरण को बुलाकर उन्हें अपनी इच्छा से अवगत कराया।लम्बू हिरण ने पूछा, क्या दुकान एक वर्श तक बन्द रहेगी? मोनू खरगोश ने लम्बू हिरण की बात को काटते हुए कहा,''दुकान क्यों बन्द रहेगी,बेटा चलाएगा और उससे जो आमदनी होगी उसे वह ईमानदारी से हरिया खरगोश को सौंप देगा।'' हरिया खरगोश ने अपने जाने की पूरी तैयारी करने के बाद दुकान की चाभी मोनू खरगोश को सौंप दी।चाभी पाते ही मोनू खरगोश को लगा कि जैसे ईश्वर ने उसके मन की मुराद पूरी कर दी।

हरिया खरगोश के चले जाने के बाद, मोनू खरगोश ने हरिया खरगोश के नौकरों को बिना हिसाब किए नौकरी से निकाल दिया और दुकान का शटर खुला ही छोड़कर अपने घर वापस चला आया।हरिया खरगोश की दुकान बन्द होने के कारण मोनू खरगोश की दुकान पुनः चल निकली। लम्बू हिरण को जब मोनू खरगोश की करतूत मालूम चली तो उसने हरिया खरगोश के नौकरों को बुल ाकर पुनः दुकान खोल दी लेकिन अब वहाँ पर केवल चाय बिकती थी।नौकरों ने लम्बू हिरण को धन्यवाद देते हुए कहा कि आपके कारण हम लोगों का परिवार भुखमरी के कगार पर जाकर लौट आया। समय अपनी रफ्तार से चलता रहा,कैसे एक वर्श बीत गया, किसी को पता ही नहीं चला।पता तब चला जब हरिया खरगोश और सुन्दरी खरगोश घर वापस आ गए।उनके वापस आने पर लम्बू हिरण उनसे मिलने उनके घर गया लेकिन मोनू खरगोश नहीं आया।उन्होंने पूछा कि मोनू खरगोश क्यों नहीं आया। लम्बू हिरण ने कहा, ''मुझे मालूम नहीं, हो सकता है, दुकान में व्यस्त हो। आप लोग आराम करें। कल सुबह बात होगी,कहकर वह चला गया। दूसरे दिन जब हरिया खरगोश दुकान पर गया , तब उसे सच्चाई का पता चला कि कैसे मोनू खरगोश ने उसकी पीठ में छुरा भोंका है, वहीं लम्बू हिरण ने दूसरी बिरादरी के होते हुए भी मित्रता की अनुपम मिसाल पेश की। हरिया खरगोश ने जब इस बात को सुन्दरी खरगोश को बताया तो उसने कहा कि मुझे पहले से ही लम्बू हिरण ने सतर्क कर दिया था इसलिए हम लोगों का नही, बल्कि मोनू खरगोश का ही नुकसान हुआ।आप कल से दुकान में पुनः पहले की तरह समोसा और जलेबियाँ बनाइए। धीरे-धीरे दुकान पुनः अपनी पुरानी गति से चलने लगी और मोनू खरगोश की बिक्री उसी अनुपात में कम होने लगी। भगवान की कृपा से अभी लौटे हुए,एक वर्श भी नहीं बीता था कि उन्हें पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई,जिसकी बधाई देने के लिए,लोगों का ताँता लगा रहा और मोनू के लड़के को पुलिस चोरी के इल्जाम में जेल ले जा रही थी। लम्बू हिरण ने जब सुना तो कह पड़ा कि बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है। ईश्वर के यहाँ देर है अन्धेर नहीं।

डॉक्टर प्रदीप चित्रांशी पर केंद्रित विशेषांक



# गुरु रूठे नहिं ठौर

**डॉ. प्रदीप चित्रांशी**

धार्मिक,आध्यात्मिक एवं सामाजिक दृश्टि से महाभारत एक विशाल ग्रन्थ है,जिसमें जीवन के सभी गूढ़ रहस्यों को समाहित किया गया है,जिसके रचयिता कृष्ण द्वैपादन व्यास हैं। महर्षि व्यास का जन्म आशाढ़ पूर्णिमा के दिन माता सत्यवती के गर्भ से हुआ था। कहा जाता है कि जन्म होते ही वह बालक बड़ा हो गया और माता से बोला, "माता! मुझे जाने का आदेश दें, आप जब कभी विपत्ति में मुझे स्मरण करेंगी,मैं उपस्थित हो जाऊँगा।"इतना कहकर वे तपस्या के लिए द्वैपायन द्वीप चले गए।द्वैपायन द्वीप में तपस्या करने तथा रंग काला होने के कारण उन्हें कृष्ण द्वैपायन कहा जाने लगा। आगे चलकर वेद का विभाजन करने के कारण वे वेदव्यास के नाम से विख्यात हुए।

महर्षि व्यास त्रिकालदर्शी थे इसीलिए उन्हें बोध हो गया था कि कलियुग में धर्म क्षीण हो जाएगा जिसके कारण मनुष्य नास्तिक,कर्तव्यहीन, और अल्पायु हो जायेंगे।एक विशाल वेद का सांगोपांग अध्ययन उनके सामर्थ से बाहर हो जाएगा।वेद का ज्ञान कलियुग में जन-जन तक कैसे पहुँचे यह सोचकर उन्होंने वेद को चार भागों में बाँट दिया जिससे कम बुद्धि एवं कम स्मरण रखने वाले भी वेद का अध्ययन कर सकें।व्यास जी ने उनका नाम रखा-ऋग्वेद,यजुर्वेद,सामवेद और अथर्ववेद।वेद के विभाजन के कारण ही वेद व्यास जी वेद व्यास के नाम से विख्यात हुए।चारों वेद में निहित ज्ञान के अत्यन्त गूढ़ होने के कारण वेद व्यास ने पाँचवें वेद के रूप में पुराणों की रचना की।जिनमे वेद के ज्ञान को रोचक कथाओं के रूप में बताया गया है तथा चारों वेद में निहित जीवन-सार के दर्शन को अपने शिश्यों को पढ़ाया और समझाया था उन्हीं शिश्यों ने उनके जन्मदिन पर उनको ईश्वर के समकक्ष मानकर उनकी आराधना की। उसी दिन से गुरु पूजा की यह पावन परम्परा शुरू हुई। इसे गुरु पूर्णिमा के नाम से भी जाता है।

यदि हम गुरु शब्द पर गहराई से विचार करें तो हमें लगेगा कि गुरु शब्द न होकर,अपने में पूरा एक अर्थयुक्त वाक्य है।गुरु ही शिश्य के मन के अंतस में दूशित विचार तरंगों को अपने ऊर्जामयी शब्द से विमल एवं सार्थक तरंगों में परिवर्तित कर जीवन में छाए अमा को पूर्णिमा में बदल देता है।देखिए कितना दैवीय संयोग है कि चतुर्मास में भगवान विश्णु जब विश्रामावस्था में रहते हैं, उस काल में मनुष्य को सत्पथ पर ले चलने वाला कोई नहीं रहता,तब गुरु अपने दायित्वों का निर्वहन निश्पक्ष रूप से करते हुए,धरती पर सभी प्राणियों को धर्म निहित प्रेरक कथाओं एवं स्व अर्जित ज्ञान के माध्यम से ईश्वरानुरागी बनाने में सक्षम होते हैं।वास्तव में गुरु ही हमारे अंधकारमय् जीवन को अपने ज्ञान के प्रकाश पुंज से मन में छाए तिमिर को हटाकर ईश्वरीय प्रकाश से अलौकिक कर देते हैं। गुरु की ही शरण में साधक को ज्ञान, भक्ति और योग की शक्ति प्राप्त होती है। आशाढ़ में जब धरती पर जल ही जल दिखाई देता है और आसमान घनाच्छादित होकर तिमिर को आमंत्रित करता है तब आसाढ़ की पूर्णिमा अपनी निर्मल एवं शीतल ज्योतिपुंज से धरती को प्रकाशमय् कर, गुरु का अभिनन्दन करती है। इसके ही अभिनन्दन से धरती के सभी प्राणी अपने-अपने गुरु के दर्शन हेतु गुरु के आश्रम की ओर प्रस्थान कर,उसका सानिध्य पा स्वयं को धन्य समझते हैं।

न्यू एंजेल सीनियर सेकेंडरी स्कूल,प्रतापगढ़ में शिरकत करते हुए ।

देखिए मेरे ही दोहों में-

गुरु वाणी में ही निहित,ब्रह्मा विश्णु महेश।
वाणी रस को पी रहे,नारद सहित गणेश।।

गुरु, गूढ़ से गूढ़ विशय को भी इतनी सरलता से समझा देते हैं-

गूढ़ विशय है धर्म का,कहते ज्ञानी लोग।
शरण गुरु की पाय मन,भोग रहा सुख-भोग।।

आसाढ़ पूर्णिमा के दिन गुरु दर्शन से ही चित्त प्रसन्न हो जाता है।

भटक रहा मन रम गया,सच्चे गुरु के देश।
गुरु वाणी से मिल रहा,आत्म तत्व उपदेश।।

गुरु की महिमा में अनेकानेक गीत एवं दोहे उन भक्तों के द्वारा रचे गए हैं,जो स्वयं ही सदुरु की श्रेणी में आते हैं या उनका संवाद सीधे-सीधे ब्रह्मा से होने लगता है।तभी तो किसी सन्त ने कहा है-

हरि रूठे गुरु ठौर है,गुरु रूठे नहिं ठौर।

अर्थात ईश्वर किसी प्राणी से रुश्ट हो जाएँ तो गुरु उसे अपनी शरण में लेकर उसके कल्याण हेतु कार्य करते हैं लेकिन यदि गुरु रुश्ट हो जाएँगे तो प्राणी की अनाथ हो,दर-दर भटकता रहेगा। अर्थात मन को साधने के लिए सरल और सुगम मार्ग गुरु की शरण में बैठकर पूर्णता को प्राप्त करने हेतु, साधक गुरु के दिशा-निर्देश में साधना करे। इतिहास गवाह है कि जिसने भी इस तरह से साधना की, उसने पूर्णता को प्राप्त किया।उदाहरणस्वरूप एकलव्य को ही लें, गुरु की प्रतिमा बनाकर, उससे ही आशीर्वाद प्राप्त कर,सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बन गया और गुरु के प्रति निच्छल समर्पण के कारण गुरु द्वारा अँगूठा माँगे जाने पर, अपना अँगूठा भी गुरु के चरणों में समर्पित कर, आज भी गुरु-भक्ति के क्षेत्र में श्रेष्ठ उदाहरण के रूप में एक अमिट पहचान है।

गुरु अपने शिश्य के लिए त्रिदेव के समान है क्योंकि वह अपने ज्ञान से शिश्यों को ज्ञानी बनाकर ज्ञान के क्षेत्र में उनका नव जन्म कराता है।गुरु बपने आश्रम में, शिश्यों की उदरपूर्ति के साथ-साथ भौतिक ज्ञान में निहित ब्रह्म ज्ञान का दर्शन करा कर, उन्हें दोशमुक्त बना देता है। इसीलिए कहा गया है-

गुरु ब्रह्मा,गुरु विश्णु,गुरु देवों महेश्वरः।
गुरु साक्षात परमब्रह्म, तस्मै श्री गरुवै नमः।।

पृष्ठ 1 का शेश...

# आस्था का रचनाकार...

सकता है। मुक्त छंद से छंद की तरफ की यात्रा का श्रेय एक बाल पत्रिका बाल प्रहरी के उस आयोजन को दिया जा सकता है जो कौसानी में आयोजित था, जहां महेश सक्सेना से लम्बे संवाद ने उन्हें छंद की तरफ आकृश्ट किया। छन्द की समझ होने के बावजूद वह मुक्त छन्द और नयी कविता के प्रति आग्रही नहीं हैं। उन्होंने मुक्त छन्द में लिखा भी है और उसके प्रवाह को पहचनाते भी हैं।

चित्रांशी जी ने बाल साहित्य भी लिखा है। चम्पक, भाग्यदर्पण में प्रकाशित मां की रसोई, आदि उनकी चर्चित बाल कहानी है। उनके बाल गीत का संग्रह कांव कांव करता है कौआ भी प्रकाशित है। बाल मनोविज्ञान की सही समझ के बिना लेखन में जो अधूरापन अथवा कमजोर निर्मिति दिखती है वह उनमें नहीं है। सुरभि में प्रकाशित उनकी कहानी अंधविश्वास और उसके पात्र पूजा विश्वास मुकुल आदि हमारे आस पास का जीवन है। गद्य लेखन की दृश्टि से समसामयिक और अन्य विशयों पर भी उन्होंने लिखा है। जैसे जनक का मोह बन्ध, मंगल शं करोति इति शंकरा, भोलेगिरी मंदिर में आस्था और विश्वास की गंगा आदि। होली, रक्षा बन्धन आदि पर्व के अवसरों पर वह स्थानीय समाचार पत्रों में लिखते रहे हैं। उनकी आध्यात्मिक समझ और यात्रा की झलक हम श्मशान की कबीरी में देख सकते हैं। बारह वल्लरी में यह कृति है। यह कृति वैसे नहीं लिखी गयी है जिसे हम आराम कुर्सी कल्पना या चिंतन कहते हैं बल्कि यह कृति विविध श्मशान के आनुभाविक अध्ययन पर आधारित है। अगर विशय वस्तु की सीमा को थोडा विस्मृत कर दिया जाये तो नागर जी गदर के फूल जैसी कृतियों में जो शोधपरकता और आनुभाविकता है, ऐसा ही इसमे भी है। यह कृति जीवन के उन पक्षों पर है जो वानप्रस्थ और संन्यास के महत्व को दर्शाती है, जो सनातन और शाश्वत को सुलझाती है। वस्तुतः जिसे हम भारत कहते हैं, जो ए. एल. बाशम को अद्भुत लगता है, जिससे मैक्समूलर प्रभावित हैं , जिससे इण्डोलॉजी या भारतविद्या सम्पन्न है के प्रति चित्रांशी की आस्था है। यह आस्था उनके लेखन में भी प्रकट होती है और साथ ही साथ विविध तरह के साहित्यिक आयोजन में भी। आयोजन का ढंग कभी-कभी इतना निराला होता है कि उस आयोजन में जो लोग भाग नहीं ले पाते हैं वे मन मसोसकर रह जाते हैं। गंगा और यमुना की लहरों पर दो बजरों को एक साथ जोडकर लहरों पर काव्यपाठ का वह आयोजन किसे विस्मृत हो सकता है जो आठ घंटे चला था। चित्रांशी जी के आयोजन में भारतीयता, भारतीय संस्कृति की झलक विविधतापूर्ण ढंग से मुखरित होती थी। पर्व-त्योहार के साथ-साथ अपने से पूर्व के रचनाकारों का सम्मान, अनूठे अन्दाज में उनका सम्मान, एक दिवंगत साहित्यकार के घर तेरहवीं पर श्रद्धांजलि और काव्याजंलि का आयोजन), जाति-धर्म-वर्ग से उपर उठकर समाज के कमजोर तबके और उपेक्षित बच्चों के साथ का आयोजन उन्हें औरों से अलग करता है। पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्धता और मित्रों के प्रति समर्पण उनकी पहचान है। निःसन्देह उनकी जीवन संगिनी ज्योति जी का भी उन्हें सकारात्मक संबल प्राप्त है। एक बात जिसका मैं उल्लेख करना चाहता हूं कि वह काफी हद तक आगे बढकर रिश्तों को मजबूत करना चाहते हैं, लोगों को मुख्य धारा में शामिल करना चाहते हैं इस प्रयास में कई बार वह आहत भी होते हैं पर इसकी कोई परवाह उन्हें नहीं होती है। वे व्यक्ति की अस्मिता और प्रगति में अखण्ड विश्वास रखते हैं। यही कारण है कि जब मैं शहर की ही एक अन्य प्रतिष्ठित संस्था वैचारिकी के सचिव का भी समानांतर दायित्व ग्रहण कर रहा था तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी।

चित्रांशी जी की अस्मिता पद्य में विशिश्ट कर उभरती है। उन्होंने मुक्तक लिखे हैं। मुक्तक प्रभावित भी करते हैं। यहां मैं उनके गीतों को उदधृत करना चाहूंगा। आ रहे गीत मेरे मिलन के लिए, नेह से तुम सजाना नयन में प्रिये हो अथवा आये नैन-द्वार से चल के , गीत मधुर भावों से भरकर गीत श्रृंगार के गीत हैं। इनमें प्रेम की अनुगूंज है। ये गीत सुनते वक्त हम ठहर से जाते हैं। उनके छन्दबद्ध रचनाओं का संग्रह है चेतना के गूंजते स्वर। ये संग्रहणीय कृति है। समुद्र और नदी को अपनी व्यथा में साहित्यकारों ने हमेशा ही शामिल किया है पर चित्रांशी जी का कहना कुछ और है- आज समन्दर सहम रहा है, अपनी ही अंगडाई से/ सिमट रही है नदियां सारी/ मानव की चतुराई से। इसी तरह नये सन्दर्भ में ढाई आखर को देखिए-ढाई आखर में छिपा/ जीवन का सब सार/ सब कुछ जिसमें हैं निहित/ छल बल प्रीति अपार/ ढाई घर घोडा चले/ चौसर में हर चाल/ सारे प्यादे डर रहे/ देख अनोखी चाल। क्या हमारा आज का जीवन ऐसा ही नहीं है। सहजता से दूर, स्वाभाविकता से दूर। सहमा, चिंतित, सतर्क। कोई भी रचनाकार जो छन्द में लिखता है वह गजल में भी स्वयं को अभिव्यक्त करना चाहता है। गजल की कुछ बानगी, कुछ शेर देखिए-रूठ मां क्या गई/ रात कटती नहीं। आज कोई नहीं/ जो संभाले मुझे। नायिका नहीं, प्रिया नहीं शायद इसलिए कि जो हिस्सा बिखरा है वह कहीं से कहीं अगर संवर सकता है तो सिर्फ मां से। यह रचनाकार की परिपक्व और सुलझी दृश्टि है। इसी तरह से एक अन्य शेर में-ईश्क में तर्क-ए-वफा फूल गूलर का हुआ/ डोलती है बाग में जब एक पागल सी हवा। बाग में हवा का पागल सा डोलना बहुत ही अच्छा प्रयोग है। चित्रांशी जी लगातार लिख रहे हैं, सार्थक लिख रहे हैं। सक्रिय हैं, सार्थक सक्रिय हैं। यह हम सबको अच्छा लगता है।

रचनाकार अपनी रचनाओं में स्वयं को अभिव्यक्त जरूर करता है। इसके बावजूद कुछ प्रश्न होते हैं जो पाठक सीधे-सपाट शब्दों में जानना चाहता है। ऐसा ही एक प्रश्न है स्त्री को वह कैसे देखते हैं। उन्होंने निचोड सा जवाब दिया -स्त्री मार्गदर्शक है। स्त्री के प्रति कोई अतिरेक से भरी सकारात्मक या नकारात्मक दृश्टिकोण नहीं, एक अनुभव पर आधारित एक परिपक्व दृश्टि। इसी तरह से प्रेम के सम्बन्ध में उन्होंने यह स्वीकार तो किया कि प्रेम एक अनबूझ पहेली है पर यह सामान्यीकरण भी दिया-इसके अन्तस में जो मिठास है, वह दुर्लभ है। यह विरोधाभास है, पर अनुभूति से उपजा। समाज में जो अन्तराल है क्या होना चाहिए और क्या है के मध्य पर उनका यह मानना है कि हमें सकारात्मक रहना चाहिए। मीठा और कसैला दोनों ही फल हैं जीवन में, जमीन के। हमें स्वीकार भाव के साथ रहना चाहिए। साहित्यकार को राजनीति को दिशा देनी चाहिए, आशा की ज्योति जलानी चाहिए। ऐसा वह मानते हैं। यह पूछे जाने पर कि आप अपनी आखिरी छवि कैसी देखना चाहेंगे तो उनका यह कहना था कि सक्रिय, निरन्तर लेखन में व्यस्त व्यक्ति की, समाज की पीडा को आत्मसात कर उसमें परिवर्तन के लिए प्रयासरत रहने वाले साहित्यकार की।

किसी भी रचनाकार पर लिखते वक्त निर्वचन का प्रभाव पडता ही है, इस आलेख में भी होगा। रचनाकार और रचना के मध्य भी सब कुछ अभिव्यक्त सा नहीं रहता, ऐसे में रचनाकार, रचना और पाठक का एक ही स्थल पर खडा होना और साथ-साथ निहारना संभव नहीं होता, इस आलखे में भी उसकी कमी होगी। वस्तुतः डॉ0 प्रदीप चित्रांशी की रचना को पढते वक्त जो अपनेपन की अनुभूति होती है, उनके व्यक्तित्व के विविध पहलूओं से परिचित होकर जिस प्रतिबद्धता को हम समझते हैं और जीने की कोशिश करते हैं यही उनकी कमाई है, यही साहित्यकार की उपलब्धि है। उनका लेखन यों ही चलता रहे, इसी आशा के साथ।

**समाजशास्त्र विभाग**
**नागरिक पी.जी. कॉलेज, जंघई, जौनपुर**

# चित्रांशी के साहित्य को बयाँ करती है-श्मशान की कबीरी

## विजयलक्ष्मी'विभा'

'श्मशान की कबीरी' विचित्र सा नाम, अद्भुत कल्पना! आखिर कौन है यह कबीरी? किस उपन्यास की नायिका,किस नाटक की पात्र। क्या ये कबीरदास से ताल्लुकात रखती है?नहीं-नहीं। ये नहीं हो सकता। कबीर तो फक्कड़ सन्त थे। उनसे क्या ताल्लुक हो सकते हैं। मैं पीछे मुड़कर देखने लगी। आदिकाल से आधुनिक काल तक का पूरा साहित्य खंगाल डाला परन्तु यह नायिका नहीं मिली। फिर श्मशान शब्द पर ध्यान गया। कबीरी, वह भी श्मशान की। प्रश्नों का क्यू लग गया। अन्तर्प्रेरणा हुई कि पुस्तक की भूमिका पढ़ूँ । लेखक से ही समझूँ कि कबीरी कौन है।

मैंने लेखनी बन्द कर भूमिका पढ़ना प्रारम्भ किया। परतें खुलने लगीं जैसे किसी छिपे हुये खजाने का सुराग मिल गया हो। खजाने के द्वार खोलते ही हीरा मोती जवाहरात काव्य छन्दों के रूप में मिले। श्मशान का रहस्य खुला। जीवन के अन्त से जीवन की शुरूआत का दर्शन और जीवन की शुरूआत से जीवन के अन्त का दर्शन स्पश्ट होने लगा। ऐसा ही कुछ बयाँ करता हुआ मुझे मेरा एक शे'र याद आ गया-

जन्म लेने को मत आगमन मानिए,
ये तो है आपकी वापसी का सफर।

मैं 'श्मशान की कबीरी' के लेखक डॉ॰ प्रदीप चित्रांशी की बात कर रही हूँ जिन्होंने जीवन दर्शन और आध्यात्म की गहराइयों को नापने के लिए श्मशान भूमि के चक्कर काटे। वहाँ बैठ-बैठ कर चिन्तन मनन किया। जीवन का रहस्योदघाटन करने के लिए गहराइयों में उतरते चले गये और किसी निश्कर्श पर पहुँचने के बाद पुस्तक को पाठकों की जिज्ञासा जगाने वाला यह नाम 'श्मशान की कबीरी' दे दिया।

प्रदीप चित्रांशी ने माता-पिता का सम्मान, गुरु में विश्वास और भक्ति, प्राकृतिक अवयवों के प्रति सत्यदृश्टि समर्पण भाव स्कूली शिक्षा से नहीं बल्कि श्मशान भूमि पर बैठकर चिन्तनपूर्ण शोध कार्य करके प्राप्त किया है। बचपन से ही जन्म और मरण के भेद को समझते और समाज को समझाने का प्रयास गद्य और पद्य की सम्मिलित साहित्यिक विधाओं में कविता,दोहा,कुंडलियाँ,मुक्तक आदिक लिखकर किया है और इस प्रकार वे स्वयं गुरुवत दृश्टिगत होने लगे हैं।

जहाँ जक मैंने समझा है, कबीरी कोई और नहीं चित्रांशी जी के भावों की पावन ज्ञान समृद्ध मल्लिका उनकी आत्मा है जो उन्हें ज्ञान देती है, यही वह कबीरी है जो बतलाती है कि वह कैसे अमर है और शरीर कैसे नश्वर है। यह सब सिखाने के लिये उन्होंने माता-पिता, गुरु, प्राकृतिक अवयव आदिक को ही निमित्त बनाया है। अपने पिता के देहावसान के बाद प्रदीप जी ने जो छन्द लिखे, वे उनकी पितृ भक्ति की पराकाष्ठा दर्शाते हैं, आत्मप्रेरित और आत्म उद्भूत हैं।

जीते रहे ज्यों आप थे,
मैं चाहता खुद जी सकूँ,
जो कुछ अधूरे कार्य हैं,
दो बल,उन्हें मैं कर सकूँ।

पिता के प्रति समर्पण भाव के निर्माण की प्रक्रिया पर प्रकाश डालता है। लेखक ने कबीरी के माध्यम से समाज को संस्कार देने का महती प्रयास किया है। माता-पिता के प्रति भक्ति भाव के अतिरिक्त गुरु में श्रद्धा और विश्वास का ज्वलन्त दृश्टान्त एक पौराणिक कथा के माध्यम से रखा है जो कि वास्तव में पाठक को प्रभुदर्शन की लालसा पूर्ण होने तक अपने विश्वास पर अडिग रहना सिखाता है। वे गुरु के सम्मान में कहते हैं-

करो समर्पित मन को अपने, गुरु जी के श्री चरणों में,
भरो नहीं तुम स्वर निन्दा के,उनके प्रति निज कर्णो में,
दोश कभी गुरु का मत देखो, दोशरहित समझो उनको,
निज सामर्थ्य और श्रद्धा से, जो दे पाओ, दो उनको।

प्रदीप चित्रांशी जी ने 'श्मशान की कबीरी से(आत्मा से) आध्यात्म ज्ञान तो प्राप्त किया है, साथ ही मानव चरित्र की समस्त शिक्षाओं को भी हासिल किया है। नदी के सतत प्रवाह को देखकर उन्हें अनुभव हुआ है कि सतगुरु भी इसी पावन जल प्रवाह के समान हैं। जैसे बूँद-बूँद जल एकत्रित होकर प्रवाह में बदल जाता है, ठीक वैसे ही ज्ञान की बूँद-बूँद सागर को भरती है और कल्याण करती है। लेकिन बहता हुआ जल जब ठहर जाता है तो दूशित हो जाता है जैसे गुरु द्रोणाचार्य का ज्ञान अर्जुन पर आकर केन्द्रित हो गया था। गुरु की महत्या, मानव जीवन में साक्षात ब्रह्म के सानिध्य के समान है। चित्रांशी जी ने गुरु की दो श्रेणियाँ बतलाई हैं। प्रथम तो वे गुरु जो बचपन से मनुष्य को शिक्षा देते हैं। अक्षर ज्ञान से लेकर उच्च शिक्षा तक किताबी ज्ञान देते हैं, दूसरे वे आध्यात्म गुरु जो परम ब्रह्म से संवाद और साक्षात्कार कराते हैं।

प्रदीप जी ने अपने चिन्तन की हर कड़ी को बड़ी सुन्दर शिक्षाप्रद पौराणिक कथाओं अथवा अपने कवि के विविध विधा लेखन के द्वारा सिद्ध किया है। गुरु महिमा बतलाते हुये उनका कवि मन कहता है-

पंच नदी की जल धारा में,उतरता मन मेरा,
मंथन चिन्तन बंधन का है देखो कैसा फेरा।
फेरो में ही भूल गया है, नाम जो प्रभु तेरा,
बाँह पकड़ कर राह दिखाओ,भटक रहा मन मेरा।

जब आध्यात्मिक गुरु किसी भूखण्ड पर स्वार्थविहीन तपोस्थली बनाकर ईश भक्ति को समर्पित होते हैं तब ऐसे स्थानों को आश्रम या मठ कहते हैं। आश्रम और मठ का भी चित्रांशी जी ने विस्तृत वर्णन करते हुये उनकी सार्थक परिभाशाएँ दी हैं जो गुरु महात्म को रेखांकित करती हैं। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, प्रभु ईसा मसीह, गुरु नानक और मोहम्मद साहब ने महलों को छोड़कर जिन स्थानो में ईश भक्ति की अलख जगाई उन्हें आश्रम कहा गया।

प्रदीप ने श्रृंखलाबद्ध विश्लेशण करते हुये अध्यात्म के सर्वोच्च शिखर तक पहुँचने का मार्ग बड़े सहज,सरल और स्वाभाविक तरीके से छोटी-छोटी कहानियों और छन्दों के माध्यम से समझाया है। उनकी लेखनी के अनवरत प्रवाह को देखते हुये यह आभास होता है कि वे निश्चय ही किसी सन्यासी के पुत्र हैं। उन्होंने स्वयं इस बात को स्वीकार किया है कि बच्चे में अध्यात्म शक्ति को पहचानने के संस्कार माता-पिता और गुरु ही डाल ते हैं। यही कारण है कि प्रदीप चित्रांशी माता-पिता और गुरु के गुणगान करने से थकते नहीं, उनका मानस पिता के दिये हुये संस्कारों से सराबोर है। वे गुरु भक्त हैं, अध्यात्म के मार्ग पर चल पड़े हैं। वे आध्यात्मिक वार्ता सुनकर प्रफुल्लित होते हैं।

अन्ततः मैं इस निश्कर्श पर पहुँची कि जिस श्मशान भूमि को प्रायः लोग भयावह जगह कहकर वहाँ जाने से कतराते हैं, जहाँ बच्चों और महिलाओं का जाना भी वर्जित समझा जाता है, उसी जगह को चित्रांशी जी की कबीरी ने मंदिर की तरह पावन भूमि सिद्ध कर समाज को नया मार्ग दिखाया है। मनुष्य की जन्मभूमि से मरणभूमि तक समभाव दृश्टि रखना ही आध्यात्मिक सत्य है। जैसे मन्दिर पावन स्थल है वैसे ही श्मशान भूमि भी पूजा स्थल है और दोनों ही स्थानो पर मनुष्य को ईश्वर के दर्शन होते हैं और मन को शान्ति मिल ती है।

'श्मशान की कबीरी' शीर्शक देखकर मेरे मन में जो भाव आया था, उस सत्य को बेबाक लिखने का मोह संवरण नहीं कर पा रही हूँ। मैंने सोचा था उस सत्य को यह निश्चय ही श्मशान भूमि की कोई प्रेतात्मा है जिसका नाम 'कबीरी' रखा गया है। परन्तु पुस्तक को अन्त तक पढ़ने के बाद मुझे महसूस हो रहा है कि मेरा हृदय परिवर्तन हो गया है। चित्रांशी जी ने श्मशान की भयावही भूमि को मंदिर के समकक्ष पावन दर्शाया है। उन्होंने कबीरी के माध्यम से भटके हुये समाज को सत्य के दर्शन कराये हैं। प्रणम्य उनकी लेखनी को।

**कवयित्री एवं समीक्षक**
**149 जी/2,चकिया**
**प्रयागराज**

# एक व्यक्ति एक व्यक्तित्व

## अनवार अब्बास नक़वी

उत्पत्ति या जन्म के आधार पर हर भाशा का एक क्षेत्र होता है मगर उसके बोलने तथा उसको अन्य क्षेत्र में स्थापित करने पर भाशा अपने मूल क्षेत्र की सीमा तक सीमित नहीं रहती। हम भारतीय सारे विश्व के सामने गर्व के साथ यह कह सकते हैं कि हमारे बहुभाशीय देश भारत की विभिन्न भाशायें किसी न किसी स्तर पर आज संसार के सभी देशों में स्थापित हैं।

वास्तविकता यही है कि भाशाओं का संबंध उसके बोलने वालों से होता है तो फिर यह सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं कि एक कवि जो भाशा को जीवन भर जीता है और मरणोपरांत भाशा जिसे जीवित रखती है उस से बड़ा कोई भाशा का संबंधी नहीं। डॉक्टर प्रदीप चित्रांशी जी हिन्दी भाशा के कवि हैं,हिन्दी जी रहे हैं और ऐसा करते हुए उन्होंने अन्य भाशाओं से समन्वय भी बनाये रखा,इस प्रकार के साहित्यकार और कवि अपनी मुख्य़ भाशा को नये आयाम देने वाले और भाशाकोश में वृद्धि करने वाले होते हैं।

चित्रांशी जी से मेरी भेंट बहुत पुरानी नहीं,कुछ वर्श पूर्व वह मेरे एक ऐसे परिचित के साथ मेरे घर आये थे जिन से बीच के बीस बरस मेरी कोई भेंट बात नहीं हुई थी,अतः मैं यह कह सकता हूँ कि चित्रांशी जी मेरे ऐसे नये संमपर्की हैं जो एक पुराने संपर्की से संपर्क का माध्यम बने।

हम साहित्य और साहित्यिक मंच से जुड़े हुओं का नये-नये लोगों से मिलना जुलना लगा ही रहता है इस लिए हम लोग प्रायः भेंट के संदर्भ में बहुत गम्भीर नहीं होते,हो भी नहीं सकते,मगर चित्रांशी जी से जब मैं पहली मिला तो थोड़ी ही देर में मुझे इस बात का आभास हो गया कि मुझ में और उन में वैचारिक समानता का एक निभाने योग्य नाता है।

तीन-चार भाशाओं को थोड़ा बहुत समझने,जानने,पढ़ने और उन में लिखने के बाद मैं यह बात समझ चुका था कि हर भाशा बहुत अच्छी होती है। चित्रांशी जी से मिल ने के बाद मुझे हिन्दी साहित्य से जुड़े लोगों से मिलने का अवसर मिला और उनके आमंत्रण पर मैंने हिन्दी कार्यक्रमों का मंच साझा किया,जहाँ मैं मुख्य अतिथि भी रहा और अध्यक्ष भी। इस संदर्भ में एक बहुत विशेश बात यह है कि चित्रांशी जी सदैव उर्दू के शाइर के रूप में मेरा परिचय कराते हैं और मैं मंच से अपनी हिन्दी रचनायें भी प्रस्तुत कर देता हूँ,ऐसा कर के मैं एक ही मंच से भारत की दो भाशाओं का प्रतिनिधित्व कर पाता हूँ,ऐसा अवसर मुझे न मिलता अगर चित्रांशी जी से मेरी भेंट न होती।

कवियों और शाइरों के साथ कुछ है कि जब वह एक दूसरे के यहाँ जाते हैं तो कार्यक्रमों की बात करते हैं,रचनायें सुनते ,सुनाते हैं,मैं ऐसा नहीं करता,चित्रांशी जी भी

हैदराबाद में साहित्यिक परिचार्च में हिस्सा लेते हुए

सुनने,सुनाने के लिए नहीं आते,वह जब आते हैं तो बात से बात निकलती रहती है।जल, जंगल, जीवन प्रकृति, खेत, खलिहान,गाय,गोरू, गांव,भाशा,साहित्य,कला, संस्कृति, संस्कार,धर्म,तीज- त्योहार,हाट,मेला,समाज, मानवता जैसे विशय पर होती हुई वार्ता समय का आभास नहीं होने देती। कम लोग हैं जिन से मैं मन लगा कर बात करता हूँ और चित्रांशी जी उन में से एक हैं,ऐसा इसलिए है कि वह एक बहुत जागरूक श्रोता,गंभीर विचारक और सरल वक्ता हैं।

प्रायः लोग जिस बात से संतुश्ट नहीं होते या आहत होते हैं उस पर प्रतिक्रिया कर बैठते हैं,मगर प्रदीप चित्रांशी जी में जो धैर्य,संतोश और न्याय की विशेशता है उन्हें जल्दी और देर के आरोप से बचाती है,वह भाशा भाव पर नियंत्रण रखते हुए अपने साहित्यिक एंव लेखन धर्म के दायित्व और कर्तव्य का निर्वाह मुस्कुराते हुए करते हैं।

घर बनाने का सपना मानव के मूल सपनों में है,जब लोग घर बनाते हैं तो घर से जुड़ा हुआ आस्था स्थल भी होता है,और ऐसा होना भी चाहिए। मगर चित्रांशी जी के घर का जो सपना था उस में आस्था स्थल के साथ साहित्यिक सभागार का भी प्रयोजन था,और उन्होंने अपने स्वप्न को उसी योजना के साथ साकार भी किया,इस बात से यह स्पश्ट हो जाता है कि उनके मन में साहित्य के लिए क्या स्थान है। आज उस सभागार में साहित्यिक संगठन सक्रिय है, साहित्य के सेवा द्वारा सृश्टि, प्रकृति,मानव और मानवता की सेवा हो रही है।

चिंतन-मनन ,विचार-विमर्श, पढ़ना- पढ़ाना,सीखना-सिखाना,नयी पीढ़ी को जोड़ना,उन्हें प्रोत्साहित करना और उन्हें अवसर देना उनके स्वभाव में है। वह जितने अच्छे लेखक हैं उतने ही अच्छे मानव हैं। यह लेख मैं ने प्रदीप चित्रांशी जी की रचनाओं पर नहीं,प्रदीप चित्रांशी पर लिखा है,अभी बहुत कुछ है जो लिखा जा सकता है मगर अब यह लिख कर अपनी लेखनी को विराम दे रहा हूँ कि वह एक ऐसे व्यक्ति हैं जो अपने व्यक्तित्व में स्पश्ट और पूर्णतः लिखे हुए हैं।

**ताहिरा हाउज़,**
**79/72,अहमदगंज**
**प्रयागराज**